ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | अक्टूबर-II-2024 | अंक - 14 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सेक्रेटरी जनरल राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई का अव्यक्तारोहण

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई जी, एक ऐसा अमूल्य हीरा जिसे स्वयं पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने अपने हाथों से तराशा। एक ऐसा अलौकिक नाम जो हरेक ब्रह्मावत्स की जुबान पर आते ही हृदय में मिठास भर देता। एक ऐसा चुम्बकीय व्यक्तित्व जो पहली ही मुलाकात में सबके दिलों पर अमिट छाप छोड़ देता। 20 नवम्बर 1938 के दिन पंजाब में होशियारपुर जिले के छोटे से गांव गुरदासपुर में जन्म लेने वाले एक नन्हें से बालक निर्वैर सिंह को देखकर शायद ही किसी को अंदाज़ा हुआ होगा कि एक दिन यह अध्यात्म की ऊँचाइयों को छूकर मानवता की सच्ची सेवा का आधार स्तम्भ बनेगा।

नाम मिला निर्वैर... अध्यात्म में रही रुचि

इनका लौकिक जन्म अकाली घर में हुआ पंजाब में, और नाम मिला निर्वैर। ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने के बाद जब इन्होंने ये रियलाइज़ किया कि मुझे तो बचपन से ही नाम ऐसा मिला हुआ है कि किसी से वैर ही नहीं है। बस... सबसे प्यार है।

बचपन से ही स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गांधी, डॉ. राधाकृष्णन की किताबें पढ़ने वाले ब्र.कु. निर्वैर भाई जी का नाम आज विश्व की महानतम आध्यात्मिक विभूतियों में लिया जाता है।

आप ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू में बतौर जनरल सेक्रेट्री अपनी सेवायें दे रहे थे।

आपने 13 साल की उम्र से ही आध्यात्मिक -शेष पेज 11 पर...

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा युवाओं को मज़बूत और सशक्त बनाने की पहल का लाभ लें : कुलपति डॉ. पोरिया

- शिक्षाविदों के लिए 'स्वस्थ एवं सशक्त भारत के लिए आध्यात्मिक शिक्षा' सम्मेलन
- देशभर से पहुंचे विशेषज्ञ, युवाओं पर की चर्चा
- स्वस्थ व सशक्त भारत के लिए मूल्य शिक्षा ज़रूरी : दादी

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में शिक्षाविदों के सम्मेलन में संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यदि नए भारत का निर्माण करना है तो उसके लिए स्वस्थ एवं सशक्त भारत बनाना होगा। युवाओं को आध्यात्मिक शिक्षा और ज्ञान को जीवन में उतारना होगा। दादी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की शिक्षा मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनाने के लिए उपयोगी और ज़रूरी है। राजयोग ध्यान से मनुष्य के जीवन में सकारात्मक बदलाव आएगा। ब्रह्माकुमारीज़ की इस मूल्य आधारित शिक्षा से लाखों लोगों का जीवन बदला है। यह अपने आप में बहुत बड़ा उदाहरण है। हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. के.सी. पोरिया ने कहा कि आज के विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में युवाओं में तेज़ी से नशे की लत बढ़ रही है। ऐसे में उन्हें मज़बूत और सशक्त बनाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की अति आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान इसके लिए पहल कर रहा है। इसका लाभ लेना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा भाई तथा शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि आपे सभी का परमात्मा के घर में आना ही शिक्षा में नई क्रांति का प्रतीक है। हम सभी को मिलकर इसे आगे बढ़ाना है। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा ब्र.कु. शीलू बहन एवं मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी पाटन के रजिस्ट्रार डॉ. रोहित देसाई, प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. सुमन, डॉ. सी.वी. रमन यूनिवर्सिटी भगवानपुर के डीन डॉ. धर्मेंद्र कुमार समेत अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे। संचालन शिक्षा प्रभाग की ब्र.कु. सुप्रिया बहन ने किया।

सद्गुणों की प्राप्ति अध्यात्म से ही सम्भव : सविता दीदी

- हमारी शिक्षा ऐसी हो, जो अच्छे चरित्र का निर्माण करे : डॉ. अरुणा पल्टा
- शिक्षकों में इतना नैतिक बल हो जो दूसरों को प्रेरित कर सकें : डॉ. शुक्ल
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा से जीवन में सत्यनिष्ठा और सम्मान की भावना आएगी : डॉ. राव

शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर में शिक्षक दिवस सम्मान समारोह

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षाविद सेवा प्रभाग द्वारा शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में 'श्रेष्ठतम समाज के लिए मूल्य आधारित शिक्षा' विषय पर शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर हेमचन्द विश्वविद्यालय दुर्ग की कुलपति डॉ. अरुणा पल्टा ने स्वामी विवेकानन्द का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने कहा था कि हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो अच्छे चरित्र का निर्माण करे। अगर हम चरित्र का निर्माण नहीं कर पा रहे तो कितनी भी अच्छी शिक्षा हम दें, उसका कोई औचित्य नहीं है। पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सच्चिदानन्द शुक्ल ने कहा कि शिक्षकों के अन्दर इतना नैतिक बल होना चाहिए कि वह दूसरों को प्रेरित कर सकें। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को भारतीय होने के गर्व का बोध कराएं। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एन.आई.टी.) के डायरेक्टर डॉ. एन.वी. रमना राव ने कहा कि मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही जीवन में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, पर्यावरण की सुरक्षा और परस्पर सम्मान की भावना पैदा होगी। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव शर्मा ने कहा कि हमारी शिक्षा केवल रोजगार केन्द्रित नहीं होनी चाहिए। हमारा समाज सुखी तब बनेगा जब शिक्षक शिक्षा के माध्यम से छात्रों में मानवीय संवेदना जगाएंगे। ब्रह्माकुमारीज़ की रायपुर संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी ने कहा कि देश में कई ऐसी उत्कृष्ट संस्थाएं हैं जो कि अच्छे डॉक्टर्स और इंजीनियर्स बनाने का कार्य कर रही हैं किन्तु उन्हें अच्छा इंसान बनाने के लिए कोई शिक्षा संस्थान नहीं है। आध्यात्मिकता हमारे जीवन को नैतिक मूल्यों से संवारने में मदद करती है। राजयोग मेडिटेशन इसमें बहुत अधिक मददगार सिद्ध हो सकता है। ब्र.कु. रूचिका दीदी ने कहा कि आज सबके पास डिग्रियां बढ़ रही हैं लेकिन भाईचारा कम हो रहा है। अगर हमें मूल्यनिष्ठ समाज बनाना है तो उसके लिए शिक्षकों को समाज के आगे आदर्श बनकर स्वयं को प्रस्तुत करना होगा।

छोटी-मोटी अवज्ञाओं से कैसे अपने को बचायें

आज पता नहीं क्यों मैं उदास हूँ, आज मुझमें खुशी नहीं है, आज मेरे में उमंग-उल्लास नहीं है, क्या कुछ करूं, जैसे-वैसे वैराग्य होता है, उल्टा वैराग्य। बेचैनी क्यों है? ऐसी सोच चलते-चलते कभी-कभार आती है। ऐसा क्यों होता है, इसको जानने की कोशिश करते हैं।

कई बार संगठन में कोई जो हमारे से बड़े और आदर्श होते हैं जिन्हें हम महारथी कहते हैं, वो कोई गलती कर रहे हैं और हम उन्हें देखते हैं तो हमारे मन में विचार आता है कि महारथी भी ये गलती कर रहे हैं! लेकिन ये भी तो हमें समझना चाहिए कि जब वे गलती कर रहे होते हैं तब भला वे महारथी हैं? नहीं ना। इस संदर्भ में परमात्मा ने हमें बहुत स्पष्ट और बार-बार बताया है, ध्यान खिंचवाया है, फॉलो फादर न कि फॉलो ब्रदर-सिस्टर। जिस समय महारथी गलती करते हैं, उस टाइम वो परवश हैं, महारथी थोड़े ही हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारी भी तो नासमझी में, अजागरुकता में बाबा ने जो बताया है वो बात याद नहीं रहती कि 'फॉलो फादर' करना है। और हम भी गलती के वश हो जाते हैं। और हमारा भी सूक्ष्म में पाप बन जाता है, पुण्य तो नहीं होता ना। और हम उस परिस्थिति को अपने ज़हन में बसा लेते हैं और उनसे किनारा करने की कोशिश करते हैं और कई बार उनसे कनेक्शन नहीं रखने की मन ही मन सोच लेते हैं। फिर ये चक्र उल्टा ही चलने लगता। संगठन में दाने से दाना मिलकर माला बनती है ना। हम माला के मणके तो बने लेकिन माला में आना है तो कनेक्शन तो दाने से दाने का होगा ही, ये भी भूल जाते हैं।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

गलतियां किसी से भी हो सकती हैं, ऐसे में परमात्मा की शिक्षा हमें याद आनी चाहिए कि भले उनमें 99 गलतियां हैं लेकिन एक तो विशेषता होगी ना। उस विशेषता को देखना है न कि गलती को। आपने देखा होगा कि गुलाब के पौधे होते हैं तो उसमें फूल भी होते हैं तो कांटे भी होते हैं लेकिन हम किसको देखते हैं, कांटे को या गुलाब को! गुलाब को हाथ में उठायेंगे ना! तो बाबा की ये शिक्षा है कि शुभ दृष्टि रखो, कैसे देखो और हमेशा शुभ कामना की दृष्टि हो, ये बाबा का डायरेक्शन है। ऐसे दिनभर में न जाने कितनी हम बाबा की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं! भगवान की अवज्ञा करना, ये किस खाते में जायेगा? पाप के या पुण्य के? अगर साक्षी होकर देखें तो एक दिन में भी ऐसी छोटी-मोटी न जाने कितनी सारी अवज्ञाएं निकल आयेंगी। इन छोटे-छोटे पाप का प्रभाव हमारे मन-मस्तिष्क पर पड़ता रहता है। जिस कारण ये बोझ कभी न कभी हमारे किसी दिन पर हावी होता है और हमें लगता है कि मैंने तो कोई गलती की नहीं, मेरा तो चार्ट भी अच्छा है, मैंने किसी को दु:ख भी नहीं दिया फिर भी मैं उदास क्यों हूँ! खुशी क्यों नहीं है! इसलिए बाबा कहते, हमेशा बाबा की याद में रहकर कर्म करो। जो बाबा ने हमें सावधानियां दी हैं, शिक्षायें दी हैं, उनका मनन-चिंतन कर स्पष्ट अपनी बुद्धि में बिठायें ताकि हम ऐसे पाप के प्रभाव के बोझ से बच सकें। हाँ, दूसरा एक कारण पूर्व जन्म का भी हो सकता है जो हमें याद भी नहीं है। पिछले अनेकों जन्मों में न जाने हमसे कितनी गलतियां, अवज्ञायें हुई होंगी जिसका भी तो प्रभाव हमारे मन पर पड़ेगा ना।

कोई भी कार्य करते हैं तो हमें कैसे करना, मन में क्या भाव रखना, कैसे देखना और कैसे सोचना, ये सब बाबा हमें रोज़ डायरेक्शन देते हैं, याद दिलाते हैं और भिन्न-भिन्न तरीके भी बताते हैं, उनका चिंतन और मनन करना बहुत आवश्यक है। बिना चिंतन और मनन हमें स्पष्ट नहीं होगा और हम स्वच्छ भी नहीं होंगे। तब सही वक्त पर हमारी निर्णय शक्ति काम नहीं करेगी क्योंकि स्पष्ट नहीं हैं। अब बाबा कहते हैं, अब ऐसे बोझ से अपने को बचाना है क्योंकि हम विश्व के आधारमूर्त और विश्व-कल्याण के निमित्त हैं लेकिन अगर हमने ज्ञान के प्रकाश को अपने मन और अपनी बुद्धि में नहीं रखा तो भीतर अंधकार हो जायेगा और अंधकार में हमारे से ऐसे काम होते रहेंगे और हमें ठोकरें लगती रहेंगी। हम न खुद उससे बच पायेंगे और न दूसरों को बचा पायेंगे।

स्व का मालिक बनने बिना विश्व का मालिक बन नहीं सकते

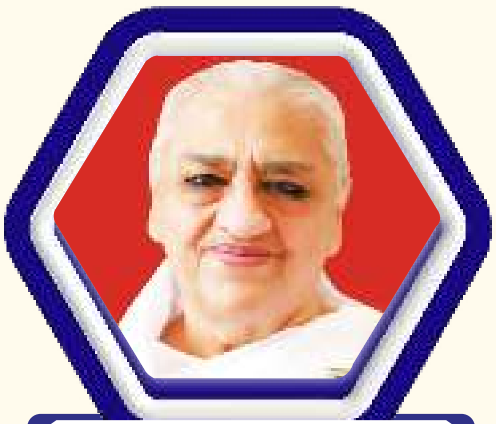

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे।

हम कहेंगे अभी हमने आधा घंटा योग किया, तो आधा घंटा योग किया या बीच-बीच में युद्ध किया? आधा घंटा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेंज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। देखो हम झाड़ के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक हैं। जहान के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय कितने स्वमान देते हैं। अमृतवेले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मज़ा आयेगा। संगठन में रहने के लिए स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है। क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर तो नहीं होंगे। माला में 108वाँ नम्बर भी तो है ना। बाबा ने सभी की खातिरी तो बराबर की। फिर भी 108वाँ नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरुषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक-दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप क्या उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूँ। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवें। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थी कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको इन अलग-अलग डाल-डालियों को इकट्ठा करके एक चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करनी है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक-दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का टाइम टेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइम टेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा! पहले स्वराज्य फिर विश्व राज्य। यह ज्ञान एक दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरू हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार में समाचार सुनो तो क्या हो रहा है! जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। बाबा के निश्चय में सब हुआ ही पड़ा है, इतने निश्चिंत।

शांति के सागर में डुबकी लगायें तो चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

हमारा बाबा रत्नागर, जादूगर, सौदागर है, उससे सौदा किया है। वह दाता, भाग्यविधाता है। ऐसे बाप को अगर न समझा तो कुछ नहीं समझा। बाबा को नहीं समझ माना अभिमान अन्दर बैठा है। कहाँ न कहाँ छिपकर अभिमान हमको यूज़ करता है, हम अभिमान के बिगर चल नहीं सकते हैं। जैसे बाबा ने देह का लोन लिया है, पर हमने तो दे दिया है। तन, मन सब ईश्वर अर्थ है। बच्चे लोन पर गोद थोड़े ही लेते हैं। अपना समझकर गोद लेते हैं। हम अधिकारी हैं तो क्या हमारे तन को बाबा सम्भालेगा नहीं!

मेरे को किसी ने पूछा था कि क्या एक मिनट में सब शान्त हो जायेंगे? तो एक मिनट का कितना फायदा है। एक मिनट में 60 सेकण्ड होते हैं। हरेक देखे कि कम से कम बाबा की साठ बातें हमारे पास हैं। कोई भी बात एक सेकण्ड में अपसेट तो नहीं कर देती है। साइलेन्स पॉवर क्या होती है जो अन्दर से यह जानता है, वो अशान्त नहीं हो सकता। बाबा ने ऐसा ज्ञान घोट के पिलाया है जो एक मिनट भी हम अशान्त नहीं हो सकते हैं। जो जितना बड़ा होता है, उसके पास अशान्ति का कारण भी उतना बड़ा होता है। हमें निमित्त बाबा ने बनाया है तो कोई कारण से भी मुझे अशान्ति हुई तो एम्बयूलेन्स बुलाना पड़ेगा।

जस्ट एक मिनट क्या है! अपने मन की अशान्ति हम सबको खत्म करनी है ताकि दुनिया से अशान्ति खत्म हो जाये। प्रैक्टिकली अशान्ति का कोई कारण है नहीं, भारी होने का कारण कोई है नहीं। अशान्ति भारी बनाती है, शान्ति हल्का बना देती है। कोई निर्णय करना है हाँ, भले। बहुत विचार की ज़रूरत नहीं है। बहुत विचारों से वातावरण भारी हो जाता है। मैंने आपका विचार नहीं माना या आपने मेरी नहीं मानी तो स्नेह चला गया। स्नेह चला गया तो रूखा बन गया, शान्ति का वातावरण चला गया। शान्ति के लिए चाहिए प्रेम, प्रेम में चाहिए शक्ति। अगर कोई अपने आपको बाबा के प्यार से, पवित्रता के बल से नहीं चलाता है तो शक्ति नहीं आ सकती है। फिर कोई मच्छर भी काटेगा तो मुंह फूल जायेगा। क्यों, बाबा के लाडले, सिकीलधे बच्चे हैं। दुनिया वालों को इतना फील नहीं होता है, हमको यहाँ ज़्यादा फील होता है। क्यों? बाबा हमारे में नैचुरल शक्ति भर रहा है। देवता पीछे बनेंगे, ब्राह्मण जीवन में ईश्वरीय गुण भर रहे हैं। अगर गुणों को धारण करने पर ध्यान नहीं है तो बाबा के प्यार की शक्ति यूज़ नहीं कर रहे हैं। अगर प्यार की शक्ति यूज़ करें तो वातावरण को हल्का और शान्त बनाना सहज है। जो मेरे योग्य नहीं है, वह संकल्प में भी नहीं आ सकता। याद रहे कि मैं आत्मा परमात्मा का बच्चा हूँ, तो वातावरण शान्त रहेगा। यह रिहर्सल नहीं करते हैं तो नम्बरवन क्वालिटी नहीं बनते हैं। शान्ति के सागर में डुबकी लगायें तो चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा। शान्ति में प्रेम, प्रेम में शक्ति, शक्ति में खुशी, इससे फिर आनंद स्वरूप स्थिति बन जाती है। इसी भावना से मैंने कहा दिल बड़ी रखो। सेवा हुई पड़ी है, अपना पुरुषार्थ करो, सफलता हुई पड़ी है, फिकर मत करो। हरेक पहले से बेफिकर रहने, राज्य अधिकारी बनने का अभी भाग्य ले लो। ऐसी स्थिति बनाना माना बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बनना।

फाउंडेशन मजबूत तब होगा जब चारों बातों में निश्चय होगा...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा ने ध्यान खिंचवाया है कि फाउण्डेशन को मजबूत करने के लिए चारों तरफ अपने को चेक करो। माल में कुछ मिक्स कर देते हैं तो पूरी मंज़िल गिर जाती है। ट्रेन का एक डिब्बा भी गिरता है तो कितनों का नुकसान होता है। हम भी ऐसा समझकर चलें कि हम अनेकों के आधार हैं। हम सब निमित्त हैं। फाउण्डेशन हमारा नीचे-ऊपर होगा तो पर्सनल मेरे को तो नुकसान होगा ही, पर उनके कारण अनेकों को नुकसान होगा और भी समझेंगे यह हिल गये तो मेरा क्या होगा! कहीं मेरा भी ऐसा न हो जाए। तो खुद का फाउण्डेशन नीचे-ऊपर होने से अनेकों के निमित्त बन जाते। इसके लिए राय है- एकान्तप्रिय बनो। फालतू अनेक बातों में अपना टाइम वेस्ट नहीं करो। जो सेवा सामने है वह दिल से, प्यार से करो तो अपने फाउण्डेशन को मजबूत रखने के लिए फुर्सत बहुत है। हम सदा निश्चिंत रहें, करनकरावनहार बाबा बैठा है। हम दिल से करें लेकिन बाबा को कभी नहीं भूलें। परिवार का स्नेह कितना बड़ा है। परिवार के स्नेह में पिरोये नहीं होंगे तो माला का मणका नहीं बन सकते। बाप, परिवार, ड्रामा और खुद में भी विश्वास चाहिए। मेरा ड्रामा में कितना श्रेष्ठ पार्ट है। बाबा ने चुनकर हमें अपना बनाया और साथ-साथ हम भी अपने आपसे पूछें कि मैं बाबा के पास क्यों आई हूँ? भविष्य में ऊंच पद पाना है और ऐसी अवस्था जमानी है जैसा बाबा हमको बनाना चाहता है।

तो अपने आपको चेक करो कि किसी से भी मैं डिस्टर्ब तो नहीं होती? किसी से घृणा तो नहीं है? किसी के ऊपर प्रभावित तो नहीं हूँ? गुणग्राहक बनो, रिगार्ड दो लेकिन फॉलो फादर। जैसे बाबा चला रहा है मुझे ऐसे चलना है। चलकर दिखा रहा है। हर रोज़ सवेरे मुरली हाथ में उठाओ, पढ़ो, सुनो, सारे दिन के लिए बहुत अच्छी रोशनी मिल जाती है। कार्य व्यवहार में चलने के लिए होमवर्क मिल जाता है। हम डायरी लेकर नोट्स नहीं देखते लेकिन बाबा ने जो सुनाया है, वह कितनी बार याद आता है, ऐसा टाइम नहीं हो सकता जो हम इतना बिजी हों, जो मुरली याद ही न आये।

फिजी। प्रवासी समुदाय के स्वागत समारोह के दौरान फिजी के प्रधानमंत्री सितिवेनी राबुका एवं भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ उपस्थित रहे स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

बिलासपुर-छ.ग.। केन्द्रीय राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रताप राव जाधव, स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, बिलासपुर विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री अमर अग्रवाल एवं बेलतरा विधायक सुशांत शुक्ला का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए टेलीफोन एक्सचेंज रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग भवन सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. स्वाति दीदी एवं ब्र.कु. संतोषी दीदी।

हमारे संस्कार हमारी एक्टिविटी, दृष्टि और शब्दों को प्रभावित करते...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब हम योग के गहराई की बात करते हैं तो उसके साथ-साथ योग की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का भी संबंध है। योग की गहराई अर्थात् उसका डीप अनुभव। ऐसा अनुभव जिससे हम लाइट-माइट के स्वरूप बन जाएं या कम से कम हमारी फरिश्ता स्टेज हो। लेकिन लम्बाई का संबंध है निरन्तर योग से। कितने समय से लगातार निरन्तर योग चला आ रहा है, वह भी देखना है। अगर हमारा योग निरन्तर नहीं होगा, बीच में टूटता रहेगा या बीच-बीच में गैप होगा तो योग की गहराई का अनुभव, जो हमें करना चाहिए, वह बीच में ऐसा विघ्न पड़ जाता है जो डिग्री, दो डिग्री या अपने-अपने अनुसार हम नीचे आ जाते हैं। योग का सारा पुरूषार्थ इसी बात पर निर्भर है कि हमारी जो चेतना है, वह क्या है? हमारी जो चेतना का स्तर है, जो हमारी अवेयरनेस है वह शिवबाबा की है या देहधारियों की है या वस्तुओं की है या पदार्थों की है। चेतना को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक- अभिचेतन, दूसरा, चेतन। अभिचेतन का अर्थ है- सूक्ष्म, जिसके लिए हम कह देते हैं- मेरा भाव ऐसे नहीं था, कई दफा हम कहते हैं कि हमारे अन्दर में यह बात नहीं हो सकेगा। इसलिए बाबा कहते हैं कि कम से कम 8 घंटा योग हो। तो इसके लिए हमें योग की लम्बाई का ख्याल रखना चाहिए। योग की चौड़ाई अर्थात् सर्व संबंध हमारे एक बाप से हों। यह जैसे योग की विशालता है। योग का अर्थ ही है आत्मा का, पिता परमात्मा से कनेक्शन। वह कनेक्शन सर्व संबंधों का एक के साथ हो। यही योग की चौड़ाई है। अगर हमारी रग और कहीं भी जुटी हुई है तो हम योग के गहरे अनुभव नहीं कर सकते। हम योग के गहरे अनुभव तभी कर सकते हैं जब हमारे संकल्प ऊंचे हों, महान हों। अगर हमें बार-बार निगेटिव विचार आते हैं तो योग में विघ्न पड़ता रहेगा और योग की गहराई का अनुभव नहीं होगा। अभी-अभी अनुभव करेंगे, अभी-अभी विघ्न पड़ने से पहले वाली स्थिति में आ जायेंगे तो योग की ऊंचाई का अनुभव नहीं कर सकेंगे। इसलिए हमारे विचार विशाल, ऊंचे, दूरदेशी होने चाहिए। तो योग की स्थिति बनाने के लिए सर्व संबंध सबसे तोड़कर एक से जोड़ें। विचार अच्छे चलते रहें, निरन्तर योग जुटा रहे।

योग अर्थात् हमारी कॉन्शियस क्या है? एक है कॉन्शियसनेस अर्थात् चेतन, दूसरा है अभिचेतन अर्थात् सब कॉन्शियसनेस।

> **हमें योग के गहरे अनुभव तब तक नहीं होंगे जब तक हम उन सूक्ष्म छिपे हुए भावों को, जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित कर रहे हैं, जिनका हमारी स्मृति से बहुत गहरा कनेक्शन है, उनकी चेकिंग नहीं है तो वह हमें गहरे अनुभव नहीं करने देते।**

जिसको हम कह देते हैं कि हमारा यह भाव नहीं था। शब्दों से अगर कोई दूसरी बात समझ लेता है तो हम कहते हैं हमारा यह भाव नहीं था। अन्दर से हमारे संस्कार हमारी एक्टिविटी को प्रभावित करते हैं, जिसका हमें भी ध्यान नहीं रहता है। हमारे संस्कार, हमारी दृष्टि, वृत्ति और एक्टिविटी को प्रभावित करते हैं।

हमारा योग लगातार लगा रहे, टूटे नहीं, हमारे विचार भी अच्छे हों और सर्व संबंध भी हमारे शिवबाबा से हों- यह हम सभी चाहते हैं लेकिन कारण क्या है जो यह स्थिति हमारी बन नहीं पाती है या थोड़ा टाइम बन पाती है और थी, शब्दों से आपने गलत ले लिया। इसे ही हम संस्कार भी कहते हैं। अन्दर में हमारे जो संस्कार हैं वह हमारी एक्टिविटी को, दृष्टि को, शब्दों को प्रभावित करते हैं। लेकिन हम उसके बारे में स्वयं सतर्क नहीं होते कि हमारा सूक्ष्म में भाव कुछ और था। तो संस्कार को हम अभिचेतन कहते हैं। जिसके बारे में हम पूरे जागृत नहीं होते। योग से उसका गहरा संबंध है। हमें योग के गहरे अनुभव तब तक नहीं होंगे जब तक हम उन सूक्ष्म छिपे हुए भावों को, जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित कर रहे हैं, जिनका हमारी स्मृति से बहुत गहरा कनेक्शन है, उनकी चेकिंग नहीं है तो वह हमें गहरे अनुभव नहीं करने देते। जो चेतन है, जिसकी कॉन्शियस है उसकी चेकिंग तो है ही, उसमें चेकिंग करने की व अटेन्शन देने की बात ही नहीं लेकिन जो सूक्ष्म है, संस्कार रूप में है उसकी चेकिंग चाहिए। पुरूषार्थ में दो बातें कही जाती हैं- एक अटेन्शन दो, दूसरा चेकिंग करो। हम अटेन्शन उस बात पर दें, जो कॉन्शियसनेस है और जो सबकॉन्शियस माइंड है, संस्कार हैं, जो छिपे हुए हमारे भाव हैं, जो हमारी वृत्ति-दृष्टि को प्रभावित करते हैं उनकी चेकिंग करने की ज़रूरत है।

- क्रमशः

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। सांसद शंकर लालवानी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. अनीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. शकुंतला बहन एवं ब्र.कु. कल्पना बहन।

नामली-म.प्र.। 'एक पौधा माँ के नाम' कार्यक्रम के अंतर्गत वृक्षारोपण करते हए स्थानीय नगर पालिका उपाध्यक्ष श्रीमती पूजा श्रीनाथ योगी, अध्यक्ष प्रतिनिधि सत्येंद्र परिहार, विधायक प्रतिनिधि बंसीलाल कुमावत, वरिष्ठ भाजपा नेता श्रीनाथ योगी, माउंट आबू से ब्र.कु. संतोष भाई, रतलाम सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. संगीता दीदी तथा अन्य।

वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। पारुल यूनिवर्सिटी बड़ौदा एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में यूनिवर्सिटी के प्रथम वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों के लिए आयोजित दो दिवसीय 'एम्पॉवरिंग योर स्पीरिटः टूल्स फॉर सेल्फ बिलीफ एंड सक्सेस' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए डॉ. मेहुल गोर,वाइस प्रिंसिपल,पारुल इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मुख्य वक्ता ब्र.कु. डॉ. दामिनी बहन,अहमदाबाद, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, ब्र.कु. परीता बहन, जय सुदानी,सीईओ पारुल इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप रिसर्च सेंटर एवं डॉ. भावना गढ़वी,डीन,फैकल्टी ऑफ फिजियोथैरेपी,पारुल यूनिवर्सिटी।

बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव अनुराग भवन सेवाकेंद्र में 'चेतना' अभियान के तहत आयोजित यातायात की पाठशाला में अति. पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ बघेल, सरकण्डा थाना प्रभारी तोप सिंह नवरंग, पुलिस अधिकारी दिलीप प्रभाकर व ब्र.कु. मंजू दीदी सहित अन्य गणमान्य लोग व ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्य विधाता भवन में 'मन प्रबंधन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू से आये राजयोगी ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई ने सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित शहर के कई गणमान्य लोग शामिल रहे।

जबलपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विज़डम पब्लिक स्कूल और एम.एल. बी. स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को 'जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू। इस मौके पर प्रिंसिपल भावना तिवारी, संस्थापक चित्रा खोडियार, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. वर्षा बहन, बिन्दू बासु, सेक्रेटरी मोहिनी मालवीय, पूजा पांडे व सोमा मालवीय सहित सभी शिक्षक स्टाफ उपस्थित रहे।

जीवन का उत्सव दीपोत्सव

कहा जाता है कि राम नवमी राम का जन्म दिवस है और नवरात्रे, राम नवमी के बाद जो अगला त्योहार हम सबके बीच में पधारेगा या आता है या आयेगा उसको हम दीपोत्सव या दीपावली कहते हैं। एक जीवन का उत्सव कब शुरू होता है, हमारे जीवन का जब एक-एक पल खुशियों में बीते, शांति में बीते, प्रेम में बीते तब वो जीवन एक उत्सव की तरह दिखाई देता है। जीवन नीरस क्यों है? या जीवन में इतनी सारी बाधायें क्यों आती हैं? तो कहा जाता है कि इच्छायें मनुष्य की सबसे बड़ी दुश्मन हैं। कहा जाता है कि कोई एक विनाशी इच्छा पूर्ण होगी तो अनेक इच्छायें जन्म ले लेंगी। और फिर इच्छाओं के चक्र में मकड़ी के जाल मुआफिक हम फंसते जायेंगे। छूटना भी चाहेंगे लेकिन छूट नहीं सकेंगे। तो हमारे जो अतृप्ति का कारण है, अतृप्ति का आधार है, कारण और आधार दोनों हैं- वो है हमारी इच्छायें। कहा जाता है कि वर्तमान समय में विश्व में चारों तरफ इच्छायें बढ़ रही हैं। इच्छाओं के वश आत्मायें बहुत परेशान हैं। इसलिए परमात्मा आकर हम बच्चों को वैराग्य दिलाते हैं।

जब हमारी आत्मा की ज्योति जग जाती है यानी कि जब हम सर्व इच्छाओं से परे हो जाते हैं तब हमारी स्थिति शांत और स्थिर हो जाती है। उसके प्रतिफल हम दूसरे का दीप जलाने के योग्य बन जाते हैं। परिणामस्वरूप न तो हमारे से गलत कर्म होता है और न ही हमारे अन्दर किसी के प्रति नफरत , ईर्ष्या और द्वेष होता है। जिस कारण हमारा हर दिन दीपावली उत्सव में बीतता है। इस आध्यात्मिकता को आप भी सोचें, समझें और जीवन में हर दिन उत्सव की तरह मनायें।

अब यहाँ वैराग्य का अर्थ ये नहीं है कि आपको जीना नहीं है, घरबार छोड़ देना है, बाहर चले जाना है, बिल्कुल नहीं। वैराग्य का यहाँ अर्थ है कि जैसे जब हमारी बुद्धि को कोई बात समझ में आ जाती है कि इस दुनिया में जो चीज़ें हमारे पास हैं उनका आज नहीं तो कल जाना तय है। जब जाना तय है तो इसका ज्ञान, इसकी समझ मुझे उस चीज़ से जुड़ना सिखाती तो है लेकिन साथ-साथ डिटैच होना भी सिखाती है। तो ये चीज़ जब हम समझ जाते हैं तो हम इस दुनिया में रहते हुए भी बेहद के वैरागी होते हैं। बेहद के वैरागी का अर्थ संसार में हैं, सारी चीज़ों को यूज़ भी कर रहे हैं लेकिन डिटैच भी हैं, उससे अलग भी फील कर रहे हैं। इसी से खुशी का अनुभव होता है। अब आपने कभी ये घटना सुनी होगी कि सीता जी वो जब वनवास गये तो कहा जाता है कि उसके पहले की एक कड़ी और उसमें जुड़ जाती है कि जब रावण के यहाँ से सीता जी को लाया तो उनको अग्नि परीक्षा देनी पड़ी। और एक बार नहीं दो बार देनी पड़ी।

ऐसे ही घरों में हमारी स्थिति है कि जब कोई बार-बार हमारी बुद्धि को, हमारे मन को टॉर्चर करता है, बार-बार कोई कुछ बोलता है तो उस समय हमारी बुद्धि में पूरी दुनिया के लिए वैराग्य आता है। अगर हम अन्दर से इतने सच्चे, साफ हों भी तो भी दुनिया उस बात को स्वीकार न करे। तो जो वैराग्य पैदा होता है अब वो वैराग्य क्षणिक भी हो सकता है और लम्बे समय का भी हो सकता है।

तो सीता जी को ये दिखाया गया कि जब वो वन में गये, और वहाँ पर एक साधारण जीवन जीना शुरू किया, सभी के बीच में रहना शुरू किया तो व्यक्ति राजसी ठाठ से साधारण जीवन में कब आता है? वो राजसी ठाठ में था लेकिन फिर भी अगर वहाँ ये सारी बातें चल रही हों तो उसका सुख तो नहीं ले पा रहा है ना! तो नॉर्मल जीवन में आने का मतलब है, साधारण जीवन में आने का मतलब है कि सबके बीच में रहते हुए सबको सबकुछ देते हुए एक स्वावलंबी और एक निर्विकारीपन और एक हर्षितमुख वाला जीवन जीना शुरू किया। जिसमें दिखाया जाता है कि उनके दो बच्चे थे लव और कुश। बच्चा तो एक ही था। लेकिन कहा जाता है कि एक खो गया तो कुश से उन्होंने एक बच्चा पैदा कर दिया। तो ये दिखाया गया कि जब हमारे अन्दर वैराग्य आता है तो हमारी खुशी बढ़ जाती है। और उसी खुशी के दो पहलू दिखाये लव और कुश। लव माना लव, प्यार, कुश माना खुशी। और वो खुशी लम्बे समय की है। इसीलिए सीता को विदेही भी कहते हैं, बिना देह के।

तो आप देखो, जब तक हम सभी भी बिना देह का नहीं बनेंगे, बार-बार इस देह से डिटैच नहीं होंगे, बार-बार इस देह से अलग नहीं होंगे तब तक हमारी बुद्धि से इच्छायें नहीं जायेंगी। और शरीर का भान जितना अधिक होगा उतना इच्छायें भी प्रबल होती जायेंगी। तो हमारे जीवन में उत्सव कैसे आयेगा? इसीलिए दीपावली का पर्व पूरी तरह से इसी का आधार है। जब हम पूरी तरह से इस दुनिया से डिटैच होते हैं, सारा कुछ करते हुए यहाँ अनुभव करते हैं तो उस स्थिति में हमारे अन्दर उत्सव का माहौल पैदा होता है। हमारा हर पल, हर क्षण, उत्सव होता है। क्योंकि आत्मा की ज्योति आज जग गई, आत्मा जागृत हो गई, जागी हुई अवस्था में है तो उससे कोई भी गलत कर्म नहीं हो रहा है। जब गलत कर्म नहीं हो रहा है तो उसका हमेशा दीपावली का पर्व मनाया जा रहा है।

परमात्मा आकर हम बच्चों से इसी तरह के आधार की बात कर रहे हैं कि दीपावली का पर्व एक दिन क्यों, हर दिन क्यों नहीं? और हर दिन दीपावली का पर्व मनाने के लिए सबसे पहले इस बात का बहुत ध्यान रखना है कि मैं कितना जगा हुआ हूँ। इसलिए उसका यादगार दिखाते हैं कि रावण को राम ने जब मारा या रावण पर राम ने जब विजय प्राप्त की माना बुराई पर अच्छाई की जब विजय हुई तब जाके दीपोत्सव मनाया गया। दीपावली का त्योहार, जब उनका आगमन हुआ आयोध्या में तो ये हमारी स्थिति ही तो है, जब हम विकारों को जीत लेते हैं, रावण माना विकारों को जीत लेते हैं, एक-एक इच्छाओं से परे हो जाते हैं तो हमारा जीवन उत्सव बन जाता है। और वो उत्सव हर पल हमको खुशी और शांति देता है। तो चलो हर पल राम बनें। रावण पर विजय प्राप्त करते हुए राम बनें। और राम बनकर उत्सव को दीपोत्सव में मनायें। हमेशा आत्मा की ज्योति जगाकर रखें, विकारों से दूर रहें और जीवन को खुशहाल बनायें।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हृदयरोगियों के लिए आयोजित 181वें थ्रीडी कैड प्रोग्राम के शुभारंभ में शामिल हुए ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह, कैड प्रोग्राम के निदेशक डॉ. सतीश गुप्ता, गुजरात से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उर्मिला दीदी, नागार्जुन फर्टिलाइज़र के चेयरमैन के.एस. राजू, ब्र.कु. बाला बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

रीवा-म.प्र.। पुलिस महानिरीक्षक रीवा ज़ोन डॉ. महेंद्र सिंह सिकरवार व पुलिस उपमहानिरीक्षक रीवा ज़ोन साकेत प्रकाश पांडे के निर्देशन में एवं पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह के नेतृत्व में पुलिस सामुदायिक भवन रीवा में ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से 'अध्यात्म और तनाव प्रबंधन' विषय पर आयोजित कार्यशाला को ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल ज़ोन की ज़ोनल निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी एवं संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने सम्बोधित करते हुए सभी का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर अति. पुलिस अधीक्षक रीवा देहात विवेक लाल, मुख्यालय उप पुलिस अधीक्षक श्रीमती हिमाली पाठक, रक्षित निरीक्षक वंदना सिंह, ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल ज़ोन से आये ब्र.कु. सतनाम भाई, एसडीओ मध्य प्रदेश हाउसिंग पुलिस सी.पी. मालवीय, ब्रह्माकुमारीज़ रीवा के संयोजक वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई, आर.बी. पटेल, ब्र.कु. सुभाष भाई सहित समस्त थाना प्रभारी सूबेदार दिलीप तिवारी, सूबेदार अंजलि गुप्ता एवं पुलिसकर्मी उपस्थित रहे।

संगदोष और परचिंतन से बचते हुए बाबा की छत्रछाया का अनुभव करें

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

संगमयुग पर बाबा ने ये श्रेष्ठ भाग्य दिया कि बाबा की छत्रछाया में हम सभी पल रहे हैं। दुनिया की आत्माओं को जब देखते हैं तो हमेशा जैसे बाबा कहते हैं कि निधन के हैं, भले उनके पास में भी अपने लौकिक मात-पिता की छत्रछाया होते हुए भी निधन के ही हो जाते हैं क्योंकि परमात्मा मात-पिता को नहीं पहचानते। और इसीलिए बाबा कहते कि जिसके ऊपर छत्रछाया ही न हो वो सहजता से रूलते-पिलते हैं। और इसीलिए सबसे पहले तो माया के संगदोष में आना स्वाभाविक हो जाता है।

माया जब देखती है कि ये कच्चे हैं, गफलत कर रहे हैं बार-बार तो माया सहजता से अपने वश में करना आरम्भ करती है। और इसीलिए चाहे माया किसी को निमित्त बनाकर ले आती है या जैसे कहा आजकल ये साधनों के माध्यम के वश हो जाते हैं। और एक बार जब किसी की आदत लगती है तो फिर पैर फिसलता ही जाता है। क्योंकि कहा जाता है कि वो रोड बड़ा स्लीपरी होता है और इसीलिए फिसल के कहाँ से कहाँ पहुंच जाते हैं। कभी-कभी तो होश भी नहीं आता है और पहुंचने के बाद समझ में आता है कि अरे ये कहाँ पहुंच गये हम! और फिर वहाँ से बाहर निकलना बहुत कठिन होता है।

इसलिए बाबा ने हम बच्चों को यह सबसे बड़ा सौभाग्य दिया है कि बच्चे बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो माया का कोई भी प्रभाव हमारी बुद्धि को प्रभावित न करे। बाबा जैसे मुरली में कहते हैं कि अपने आप से बातें करो और दूसरा है जब आपस में बात करते हैं तो भी हमें क्या लेन-देन करना है। स्व उन्नति की बातों का ही लेन-देन करना है। या सर्विस के विषय को लेकर लेन-देन करना है कि सर्विस कैसे वृद्धि को पाए या फिर बाबा कहते ज्ञान का मनन-चिंतन करो। क्योंकि उसी से ही हमारी उन्नति होगी बाकी और कोई भी बातचीत करते हैं तो उसको बाबा परचिंतन में ही गिनती करता है। बाबा कहते कि परचिंतन पतन की जड़ है। आत्म चिंतन उन्नति की सीढ़ी है। और इसीलिए जैसे-जैसे आत्म चिंतन करते जाओ, देखो फिर कितना ऊंचा चढ़ते जाते हैं। मैं कई बार सोचती हूँ कि कितना व्यक्ति को मानसिक रूप से कमज़ोर करता है ये संगदोष। चाहे व्यक्ति का संगदोष हो स्थूल में, चाहे इलेक्ट्रॉनिक संगदोष हो, मोबाइल आदि का।

> **बाबा जैसे मुरली में कहते हैं कि अपने आप से बातें करो और जब आपस में बात करते हैं तो भी हमें क्या लेन-देन करना है। स्व उन्नति की बातों का ही लेन-देन करना है।**

आज जब दुनिया में देखते हैं तो इसका भी एक प्रकार का एडिक्शन हो गया है और एडिक्शन इस तरह का हो गया है कि उससे अपने आप को अलग करना बहुत मुश्किल है लोगों को।

एक बहन के लिए बताया गया है कि वो ऑफिस में थी, और मीटिंग चल रही थी और मीटिंग में वो मोबाइल लेकर बैठी थी। तो उसका बॉस जो था मीटिंग के दौरान उसको बार-बार देख रहा था, दो-तीन बार उसको कहा लेकिन फिर भी वो छोड़ नहीं पा रही थी। तो उसके बॉस ने उसको छीन लिया और जैसे ही छीना तो अन्कॉन्शियस हो गई, कुर्सी पर ही गिर गई, और पाँच मिनट के बाद झाग निकलने लगा मुँह से। इतना एडिक्शन है इस चीज़ का। जिस तरह से किसी को ड्रग्स का एडिक्शन होता है और एडिक्शन माना ही जब व्यक्ति के अन्दर वो कैमिकल रिएक्शन जो होता है वो ब्रेन से रिलीज़ होते हैं। जो एक प्रकार का ड्रग एडिक्शन में लोगों को होता है वैसे ही होता है।

तो जैसे ही बेहोश होकर झाग निकलने लगा तो उसका बॉस घबरा गया उसको वापिस दे दिया कि ले लो तुम। और जैसे ही दिया तो झाग भी चला गया और वापिस वो देखने लगी। आजकल तो दुनिया के अन्दर छोटा बच्चा भी बिना मोबाइल के खाना नहीं खाता है। वहाँ से एडिक्शन हो रही है। तो ये एक प्रकार की तामसिकता जिसको कहा जाए मन-बुद्धि की भी तामसिकता।

इसीलिए कहा कि ये कलियुग का जैसे सबसे बड़ा अन्तिम समय का अभिशाप है। जिसके संग में कई ब्राह्मण भी फंसते जा रहे हैं। और इसीलिए उन्नति करने की बजाय, दुर्गति की ओर ज़्यादा जाते हैं। तो जो कहा जाता है संग तारे कुसंग डुबोए।

बाबा के संग में हम जितना रहते हैं तो हमारी उन्नति भी उतनी ही है। लेकिन जितना ये इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के साथ आज मनुष्य ने अपना संग बना दिया है, उससे संसार भर में कितनी अधोगति भी होती जा रही है।

- क्रमशः

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। स्वतंत्रता दिवस पर नशा मुक्त भारत और स्वर्णिम भारत थीम के तहत आयोजित कार्यक्रम में पूर्व महापौर श्रीमती ममता गुप्ता, पूर्व महापौर वीरेंद्र गुप्ता, भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के वाइस चेयरमैन हाजी ए के खान, डॉ. मुजीब खान, मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती कविता पांडेय, भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्षा श्रीमती उर्मिला द्विवेदी, भाजपा की श्रीमती नीलू रावत, श्रीमती तमन्ना मलिक, मुख्तार अहमद व ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

बैतूल-म.प्र.। विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर बैतूल जिला अस्पताल के द्वारा आयोजित 'रक्तदान जागरुकता रक्त क्रांति वाहन रैली' का शुभारंभ विधायक हेमंत खंडेलवाल, घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उइके, ब्र.कु. सुनीता दीदी एवं न.पा. अध्यक्ष पार्वती बारस्कर द्वारा ध्वज दिखाकर तथा मशाल जलाकर किया गया। इस अवसर पर जिला अस्पताल एवं विभिन्न स्थानों के स्वास्थ्य कर्मियों सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

बैतूल-म.प्र.। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'सकारात्मक सोच से मिलेगी तनाव और व्यसनों से मुक्ति' विषय पर विद्यात्री पब्लिक स्कूल बैतूल में आयोजित जागरुकता कार्यक्रम में ब्र.कु. तरुण भाई एवं ब्र.कु. सविता बहन ने सभी का मार्गदर्शन कर नशा मुक्ति का संकल्प कराया। इस मौके पर स्कूल के डायरेक्टर रमेश धोटे, समस्त शिक्षक, प्रदीप ठाकुरद्वारे, आर.पी. सोनी, तरुण मालवीय व अन्य भाई-बहनों सहित 200 से अधिक विद्यार्थीगण मौजूद रहे।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन सेवाकेंद्र द्वारा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस केंद्रीय कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,मा.आबू। इस मौके पर स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. वर्षा बहन, सहायक जेलर रुपाली मिश्रा, ब्र.कु. मूलचंद भाई, ब्र.कु. रवि भाई, सोनी भाई, अपूर्व भाई तथा जेल कर्मचारी मौजूद रहे।

राजनांदगांव-छ.ग.। कजाकिस्तान में 11वें विश्व स्तरीय स्ट्रेंथ लिफ्टिंग प्रतियोगिता 2024 में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले शीतलेश कुमार पटेल जिन्होंने इस प्रतियोगिता को जीतकर प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल हासिल किया का ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पुष्पा दीदी, ब्र.कु. योगेश्वरी बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. रंभा बहन, ब्र.कु. चंदा बहन, ब्र.कु. सुनंदा बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. माहेश्वरी बहन, ब्र.कु. लोकिता बहन, कोच हरिनाथ जी तथा अन्य।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ग्राम निवारी ग्राम खोप में विश्व पर्यावरण दिवस पर 'हमारी पृथ्वी हमारा भविष्य' वार्षिक थीम के तहत आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. रीमा बहन, ब्र.कु. नम्रता बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे।

मरोली-गुज.। पुलिस स्टेशन में पीआई डी.जे. पटेल सहित सभी पुलिस कर्मियों एवं स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मुकेश बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

जावरा-म.प्र.। टी.आई. जितेंद्र सिंह जादौन सहित अन्य पुलिस अधिकारियों को रक्षासूत्र बांधकर ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं ब्र.कु. सावित्री बहन, ब्र.कु. शिवकन्या बहन व अन्य।

स्वास्थ्य

काले अंगूर खायें और बेमिसाल फायदे पाएं...

अंगूर में हरे रंग के अंगूर का सेवन लोग अधिक करते हैं, लेकिन सेहत लाभ जिस अंगूर को खाने से अधिक होता है, वह है काला अंगूर। जी हाँ, काले अंगूर में कई तरह के पोषक तत्व मौजूद होते हैं, जो शरीर के लिए ज़रूरी होते हैं। हरे और लाल अंगूर की तुलना में काले अंगूर में एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होता है। तो चलिए जानते हैं कि काले अंगूर के सेवन से और क्या-क्या फायदे हो सकते हैं।

काले अंगूर में पोषक तत्व

कई तरह के पोषक तत्वों से भरपूर होता है ब्लैक ग्रेप्स, इसमें पोटैशियम, मैंगनीज, विटामिन सी और के, कॉपर, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, कार्बोहाइड्रेट आदि होते हैं। पानी की मात्रा लगभग 82 प्रतिशत होती है। ऐसे में इसमें नैचुरल शुगर हाई होने के बावजूद भी ये कैलोरी में काफी कम होता है। अंगूर खट्टे और मीठे होते हैं लेकिन लो कैलोरी और फैट फ्री होते हैं।

इम्युनिटी को करे मजबूत

चूंकि, इस फल में विटामिन सी की मात्रा अधिक होती है इसलिए यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बूस्ट करता है, इम्युनिटी बूस्ट होने से आप कई तरह के रोगों और इंफेक्शन से बचे रह सकते हैं।

आँखें रहेंगी हेल्दी

यदि आप काले अंगूर का सेवन करते हैं तो आपकी आँखों की सेहत भी अच्छी रहेगी। कम उम्र में नज़र दोष की समस्या से ग्रस्त नहीं होंगे। इसमें मौजूद कुछ पोषक तत्व आँखों की रोशनी बढ़ाते हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट रेस्वेराट्रोल में एंटी ऑक्सीडेटिव, एंटीइंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो मोतियाबिंद, कमज़ोर आँखों की रोशनी जैसी समस्याओं से बचाव करते हैं।

पाचन तंत्र दुरुस्त रखता है

ये फाइबर का अच्छा स्रोत होते हैं, जो पाचन क्रिया के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। इनसे कब्ज की समस्या कम होती है और अपच की परेशानी भी नहीं होती।

त्वचा को स्वस्थ बनाए

काले अंगूर में विटामिन सी और अन्य पोषक तत्व होते हैं, जो त्वचा स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं। इतना ही नहीं, काले अंगूर झुर्रियां हटाते हैं और त्वचा को बूढ़ा दिखने से रोकते हैं। इसे लगातार खाने से त्वचा जवां और निखरी हुई लगती है। इनमें मौजूद विटामिन सी स्किन सेल्स में जान भर देता है।

हाइड्रेट करता है

काले अंगूरों में पानी की मात्रा काफी अच्छी होती है। जिससे शरीर को हाइड्रेटेड रखने में मदद मिलती है।

हड्डियां बनाए मजबूत

काले अंगूर हड्डियों को मजबूत करने में भी काफी सहायक होते हैं। इसमें मौजूद रेस्वेराट्रोल नामक केमिकल हड्डियों के लिए गुणकारी होता है, जो बोन डेंसिटी बढ़ाने में सहायक होता है। साथ ही काले अंगूर में हड्डियों को मजबूत बनाने वाला कैल्शियम भी होता है। ऐसे में नियमित रूप से काले अंगूर खाने से हड्डियों के दर्द से भी राहत मिलती है।

दिमाग को रखे स्वस्थ

काले अंगूरों को नियमित रूप से खाने से एकाग्रता और याद्दाश्त बढ़ती है। दिमागी गतिविधियां सुधरती हैं। अंगूर माइग्रेन जैसी बीमारी भी ठीक कर सकता है।

वजन कम करने में फायदेमंद

अगर नियम से काले अंगूर खाएंगे तो ये वजन घटाने में भी मदद करेंगे। इनमें जो एंटीऑक्सीडेंट होते हैं वो शरीर से गैरज़रूरी टॉक्सिन्स को बाहर निकालते हैं और इस तरह वजन कम होता है।

बालों के लिए फायदेमंद

बालों की समस्या को भी छूमंतर कर सकते हैं काले अंगूर। रूसी, बालों का गिरना या सफेद होना जैसी परेशानियां दूर हो जाती हैं क्योंकि इसमें मौजूद विटामिन ई अपना असर दिखाता है। सिर की खाल तक खून का बहाव सुधरता है तो बाल भी घने, मुलायम और मजबूत होते हैं।

नौगांव-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा स्थानीय सेवाकेंद्र में पुलिस कर्मियों के लिए आयोजित 'सकारात्मक चिंतन से सकारात्मक परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम में नौगांव पुलिस थाना प्रभारी सतीश सिंह, गरौली चौकी प्रभारी नेहा गुर्जर, नौगांव रानी साहब माया सर्वानी एवं थाने से समस्त पुलिस स्टाफ सहित घुवारा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. नीतू बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन व अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन सेवाकेंद्र में डॉक्टर्स डे पर डॉक्टर्स के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में संस्कारधानी जबलपुर के विभिन्न चिकित्सा विशेषज्ञों में डॉ. संजय मिश्रा,क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवा विभाग और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जबलपुर, डॉ. जे.पी. गौर सीनियर सर्जन, डॉ. दीपक साहू, अभिजीत विश्नोई,आईएमए प्रेसिडेंट जबलपुर एवं आई सर्जन, डॉ. अखिलेश गुमास्ता अस्थि रोग विशेषज्ञ, डॉ. हेमलता रिटायर्ड आई सर्जन विक्टोरिया, डॉ. मनीष मिश्रा सिविल सर्जन विक्टोरिया, डॉ. नीरज सेठी पैथोलॉजिस्ट, डॉ. जीतेंद्र गुप्ता अधीक्षक सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, डॉ. संगीता श्रीवास्तव स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. निशा साहू स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. लखन वैश्य, डॉ. सी.बी. अरोड़ा शिशु रोग विशेषज्ञ, डॉ. संतोष रोशन, डॉ. नमिता तिवारी स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. आशीष तिवारी, डॉ. श्याम रावत कैंसर रोग विशेषज्ञ मेडिकल कॉलेज, डॉ. एस.के. पांडे पूर्व सिविल सर्जन विक्टोरिया व ब्र.कु. भावना दीदी सहित शहर के अन्य प्रतिष्ठित डॉक्टर्स शामिल रहे।

खुशखबरी

आ गई शिव संदेश,राजयोग कॉमेन्ट्री की नयी कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक जेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia.bkivv.org

ग्वालियर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के संगम भवन ओल्ड हाईकोर्ट लेन स्थित केंद्र के लगभग 35 से अधिक भाई-बहनों ने फूलबाग स्थित गांधी उद्यान में नगर निगम द्वारा आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत लगभग 105 पौधे लगाये। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में संभाग आयुक्त मनोज खत्री, नगर निगम आयुक्त हर्ष सिंह, अपर आयुक्त विजय राज, वार्ड पार्षद अपर्णा पाटिल, वार्ड जेडओ विपिन दुबे, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. महिमा बहन, ब्र.कु. आर.एस. वर्मा, ब्र.कु. राजेंद्र सिंह, जगदीश मकरानी व बी.के. गुप्ता सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

सकारात्मक शुरूआत से ही मिलते हैं अच्छे परिणाम

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

किसी भी काम की शुरूआत एक मिनट की शांति या मौन के साथ करें, जैसे दिन की शुरूआत, दफ्तर की कोई मीटिंग, खाना बनाने की शुरूआत या बच्चों की पढ़ाई भी...। आप भले ही छोटा-सा भी काम शुरू करें, लेकिन उस कार्य की सफलता का संकल्प लेकर इसे शुरू करें। कहा भी गया है कि अगर शुरूआत सही हुई तो कार्य अच्छी तरह से होना ही है। लेकिन कभी-कभी हम शुरूआत में संकल्प ही कुछ और कर लेते हैं। आप एक दिन साक्षी होकर देखें, अहसास होगा कि जाने-अनजाने में हम कितनी ही चीज़ों की शुरूआत गलत संकल्प के साथ करते हैं। घर से निकलने से पहले ही सोच लेते हैं कि रास्ते में ट्राफिक मिलेगा ही! वहां तो ऐसा होगा ही! ये तो होता ही है! पिछली बार भी ऐसा हुआ था। और हम ऐसे विचार क्यों मन में लाते हैं? क्योंकि पिछली बार के हमारे अनुभव ऐसे थे। लेकिन इस बार वही सोचकर या दोहराकर आपने उसके होने की संभावना को फिर से बढ़ा दिया। फिर अगर इस बार भी ऐसा हुआ, तो आपका गलत दिशा में विश्वास दृढ़ होता जाएगा। आपके साथ पिछली बार कुछ भी हुआ हो, या बार-बार क्यों न हुआ हो, लेकिन जब शुरूआत सकारात्मक संकल्प के साथ करेंगे तो परिणाम आपके पक्ष में होंगे। जब हम अपने चित्त को साफ करके, अच्छे संकल्प के साथ एक मिनट खामोशी में बैठकर कोई काम शुरू करते हैं तो सकारात्मक ऊर्जा के साथ काम की शुरूआत होती है और इससे परिणाम भी हमारे पक्ष में आते हैं।

इसे एक उदाहरण से और समझते हैं। आप घर से निकले, आपको कहीं पहुंचना है। लेकिन आप पहले ही दस मिनट देरी से निकले हैं। इस स्थिति में निकलने से पहले ही विचार मन में आ गया कि देर हो गई है, अब तो वक्त पर पहुंचना बहुत मुश्किल है। और इस तरह हमने मन की स्थिति को कमज़ोर कर दिया। अब अगर आप वक्त पर भी गंतव्य पहुंच गए तो भी स्थिति ठीक नहीं है, तो काम पर भी असर पड़ेगा। इसके विपरीत, अगर चलने से पहले मन में विचार किया कि हम समय पर पहुंच जाएंगे। इससे मन में व्यर्थ के विचारों पर पूर्ण विराम लग जाएगा। मन की स्थिति स्थिर हो जाएगी। इस एक विचार से आप समय पर पहुंचेंगे ही। नहीं भी पहुंचे, तब भी मन की स्थिति ठीक रहेगी।

कल्पना करिए, घर में सबको भूख लगी है, लेकिन बनाने के लिए कोई तैयार नहीं है। ऐसे में बाहर से खाना मंगाने की नौबत आ जाएगी। आज के दौर में भी वही हो रहा है, हम भी खुशी और शांति बाहर से मांग रहे हैं। घर में खुशियों के लिए एक-दूसरे की ओर ताकते हैं। नहीं मिलती तो बाहर देखते हैं। नतीजतन ये खरीदो-वो खरीदो। इधर जाओ, उधर जाओ। लेकिन क्या इससे सच्ची खुशी और शांति मिलने की गारंटी है?

माता-पिता अपने बच्चों के लिए नकारात्मकता नहीं भेजते। लेकिन जब वह किसी बात से व्यथित हो जाते हैं, तो प्यार अवरुद्ध हो जाता है। एक समय पर एक ही ऊर्जा जा सकती है। उतनी देर आपसे नकारात्मक ऊर्जा बच्चे तक पहुंच रही है। आप सोचें कि आप दुःखी, चिंतित, व्यथित होंगे तो बच्चों को किस तरह की ऊर्जा जाएगी।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। जल संसाधन राज्यमंत्री तुलसी सिलावट को राखी बांधने के पश्चात् उनके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. अनीता बहन व ब्र.कु. उषा बहन।

रीवा-म.प्र.। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस रीवा में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी को आमंत्रित कर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस मौके पर दीदी ने सभी को परमात्म संदेश दिया। कार्यक्रम में कॉलेज की प्राचार्य डॉ. श्रीमती आरती सक्सेना, जन भागीदारी के अध्यक्ष प्रबोध व्यास, डॉ. आर.के. सिंह, डॉ. वाई-बी. शुक्ला, डॉ. आरती सुमन सिंह एवं डॉ. आरती तिवारी सहित बड़ी संख्या में कॉलेज के प्राध्यापक और छात्र-छात्राएं शामिल रहे।

बिलासपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा एवं राजकिशोर नगर संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी के मार्गदर्शन में होली नर्सरी विद्यालय राजकिशोर नगर में आयोजित यातायात एवं साइबर की पाठशाला में ब्र.कु. ईश्वरी, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. अमर, ब्र.कु. प्रीतिमय चौधरी एवं विद्युत उपभोक्ता फोरम अध्यक्ष भूषण वर्मा ने बच्चों को यातायात सुरक्षा एवं साइबर फ्रॉड से बचने के महत्वपूर्ण टिप्स दिये। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक व स्टाफ मौजूद रहे।

बीदर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज़ के शिवशक्ति भवन सेवाकेंद्र द्वारा रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कारंजा इंडस्ट्रीज़ प्रा.लि. में कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में सभी वर्कर्स तथा स्टाफ को राखी बांधकर ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट किया गया। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी, ब्र.कु. पार्वती बहन, बी.एस. कुद्रे,पूर्व संचालक डीसीसी बैंक बीदर, विजय जोशी,वास्तु शास्त्री, अरविंद बिवरे,व्यापारी, नागराज कल्वटी,होलसेल चावल व्यापारी तथा शिवराज कल्वटी,संचालक,कारंजा इंडस्ट्रीज़ आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अलीराजपुर-म.प्र.। पुलिस थाना में इंदौर से आये ब्रह्माकुमारीज़ धार्मिक प्रभाग के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य ब्र.कु. नारायण भाई ने 'तनाव मुक्त जीवन व शारीरिक फिटनेस के लिए मेडिटेशन' विषय पर सम्बोधित किया। इस दौरान थाने के निरीक्षक शिवराम तरोले, अन्य पुलिसकर्मी तथा ब्र.कु. ज्योति बहन उपस्थित रहे।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्र.कु. मुकेश नेमा के 12 एकड़ के 'मधुबन' शाश्वत यौगिक जैविक कृषि फार्म हाउस का अवलोकन करने हेतु वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रोहित भाई,मा.आबू का आना हुआ। इस अवसर पर उनके साथ ब्रह्माकुमारीज़ की जिला संचालिका ब्र.कु. कुसुम दीदी, ब्र.कु. मुकेश भाई, ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. जानकी बहन, ब्र.कु. वंदना बहन, टेक सिंह भाई, जगदीश भाई, रजनीश भाई, पुरुषोत्तम भाई, ऋषि भाई, ममता बहन एवं अन्य भाई-बहनों ने मिलकर आम एवं बेल के पौधे लगाये तथा खेत में लगी फसलों के लिए राजयोग मेडिटेशन के द्वारा शुद्ध संकल्पों के प्रकम्पन(सकाश) फैलाए।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु दर्शन भवन टिकरापारा में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में यातायात जिला रोड सेफ्टी सेल प्रभारी सब-इंस्पेक्टर उमाशंकर पांडेय, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी तथा संयुक्त कलेक्टर हर्ष पाठक सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

हिम्मतनगर-गुज.। जेल में पुलिस स्टाफ के साथ सभी कैदी भाइयों को ब्र.कु. निशा बहन एवं अन्य ब्र.कु. बहनों ने रक्षासूत्र बांधा और रक्षाबंधन का संदेश दिया।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य दर्शन भवन में हरियाली अमावस्या के उपलक्ष्य में 'एक पौधा माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण में लायंस क्लब अध्यक्ष लॉयन शशि संघवी, सचिव लॉयन कौशल्या त्रिवेदी, कोषाध्यक्ष लॉयन सीमा भारद्वाज, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. आरती दीदी तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

सतना-कृष्णा नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सरस्वती हायर सेकेंडरी स्कूल कृष्णा नगर में आयोजित 'मूल्य आधारित प्रशिक्षण' कार्यक्रम में ब्र.कु. शुभम भाई, ब्र.कु. सुमित भाई व ब्र.कु. महेश भाई द्वारा सभी को आध्यात्मिकता को तकनीकी ढंग से समझने तथा उसे जीवन में उतारने का संदेश दिया गया। इस मौके पर स्कूल के प्रिंसिपल तथा सभी शिक्षक गण सहित 500 विद्यार्थी मौजूद रहे।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा उर्सुलिन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल अम्बिकापुर में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला के दौरान बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए ब्र.कु. पार्वती बहन। कार्यक्रम में 300 से अधिक बच्चों ने भाग लिया।

धमतरी-छ.ग.। चिकित्सक दिवस पर ब्रह्माकुमारी बहनों के द्वारा शहर के लगभग 50 डॉक्टर्स को तिलक, वरदान कार्ड और पौधा भेंट कर सम्मानित किया गया एवं मुख मीठा कराया गया।

विदिशा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र ए-33 मुखर्जी नगर की ओर से जिला जेल अधीक्षक प्रियदर्शन श्रीवास्तव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रुक्मणि बहन व ब्र.कु. रेखा बहन।

कथा सरिता

पुराने समय में एक संत अपने शिष्यों के साथ धर्म प्रचार करने के लिए यात्रा कर रहे थे। इस दौरान में अलग-अलग जगहों पर रूकते और लोगों को उपदेश देते थे। एक दिन वे ऐसी जगह पहुंचे जहां कुछ निर्माण कार्य चल रहा था।

संत उस जगह पर पहुंचे तो वहाँ कई मजदूर पत्थरों को तराश रहे थे। एक मजदूर से संत ने पूछा कि यहाँ क्या बन रहा है? वह मजदूर गुस्से में था। उसने जोर से कहा कि मुझे नहीं मालूम,आगे जाओ बाबा। संत वहाँ से आगे बढ़ गए।

वे दूसरे मजदूर के पास पहुंचे। उससे भी संत ने पूछा कि यहाँ क्या बनेगा?

दूसरे मजदूर ने कहा कि गुरूजी मुझे इस बात से क्या मतलब, यहाँ कुछ भी बने। मैं यहाँ सिर्फ मजदूरी के लिए काम कर रहा हूँ। दिनभर काम करने के बाद शाम को पैसे मिल जाते हैं।

संत वहाँ से आगे चल दिए। अब वे एक और मजदूर के पास पहुंचे। तीसरे मजदूर से भी संत ने यही पूछा कि इस जगह पर क्या बन रहा है?

तीसरे मजदूर ने संत को प्रणाम किया और बोला कि गुरूजी यहाँ मंदिर बन रहा है। गांव में मंदिर नहीं था। अब पूजा करने के लिए दूसरे गांव नहीं जाना पड़ेगा।

संत ने उससे फिर पूछा कि क्या तुम्हें इस काम में खुशी मिलती है?

मजदूर बोला कि मंदिर बनने से मैं बहुत खुश हूँ। मुझे इस काम में बहुत आनंद मिलता है। छेनी-हथौड़ी की आवाज़ में मुझे संगीत सुनाई देता है।

सुखी जीवन का सूत्र

ये बात सुनकर संत ने अपने शिष्यों से कहा कि यही सुखी जीवन का सूत्र है। जो लोग अपने काम को बोझ मानते हैं, वे हमेशा दु:खी रहते हैं और जो लोग अपने काम को प्रसन्न होकर करते हैं वे हमेशा सुखी रहते हैं। अगर हम अपना नज़रिया बदल लेंगे तो जीवन में सुख-शांति के साथ ही सफलता भी मिल सकती है।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा निर्मित आध्यात्मिक फिल्म 'ब्रह्मा सो विष्णु' को दो तेलुगु राज्यों के मल्टीप्लेक्स थिएटरों में दिखाए जाने के तहत बेंजीसर्किल ट्रेंड मॉल में फिल्म की स्क्रीनिंग कार्यक्रम में विजयवाड़ा पूर्व निर्वाचन क्षेत्र के विधायक गड्डे राममोहन राव, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. शांता दीदी, ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. रत्ना, ब्र.कु. वेणी, ब्र.कु. रम्या, ब्र.कु. कंचन, ब्र.कु. सिंधु, ब्र.कु. सिरिशा, ब्र.कु. नागाराजू तथा अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में चैतन्य झाँकी के कलाकारों के साथ जिला एवं सत्र न्यायाधीश इन्द्रभूषण शर्मा, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी तथा ब्र.कु. विनीता बहन।

सूरत-गुज.। विधायक पूर्णेश भाई मोदी,धारासभ्य को रक्षासूत्र बांधते हुए अडाजन सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दक्षा बहन। साथ हैं ब्र.कु. हेतल बहन।

अमरावती-महा.। जिलाधिकारी सौरभ कटियार को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सीता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. ज्वाला बहन।

सूरत-अडाजन(गुज.)। नंदकिशोर शर्मा प्रांत सह संपर्क प्रमुख सूरत,राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(आर.एस.एस.) को ब्लेसिंग कार्ड देकर परमात्म संदेश देते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. हेतल बहन।

चार शब्द...
स्थिति के यथार्थ मर्म को समझें

महावाक्य व मुरली सुनते हुए अक्सर हम चार शब्द सुनते हैं जिसकी प्रैक्टिस हम सभी भी करते हैं लेकिन उन चारों शब्दों को वास्तविक अर्थ में न समझने के कारण हम उन्हें एक ही समझ लेते हैं। इसको जानकर और उसके भावार्थ व गहराई को समझकर पुरूषार्थ करें तो उसकी अनुभूति करने में हमें मदद मिलेगी। एक है विदेही स्थिति, दूसरा आत्म-अभिमानी स्थिति, तीसरा अशरीरी स्थिति और चौथा देही-अभिमानी स्थिति।

विदेही स्थिति : विदेही स्थिति का अलग-अलग शब्दों में इस्तेमाल किया जाता है। विदेही शब्द का अर्थ है निराकारी स्वरूप। जैसे कहते हैं 'विदेही बाप' माना जिन्हें अपनी देह नहीं है। तो उन्हें कहते हैं विदेही बाप। हमको भी विदेही बनना है। शरीर को भूलना है। हमें विदेही बनना है माना बाप समान निराकारी बनना है। जैसे बाप निराकार है, वैसे ही हम भी निराकार हैं, उस स्थिति का अनुभव करना।

अशरीरी स्थिति : अशरीरी का अर्थ है शरीर में होते भी शरीर का भान न रहे। स्थूल में रहते हुए शरीर की फीलिंग न रहे। बाबा हमेशा कहते हैं "विदेही बाप अपने बच्चों को विदेही बनाने आये हैं।" यह कभी नहीं कहेंगे कि "अशरीरी बाप अपने बच्चों को अशरीरी बनाने आये हैं।" तो दोनों का अर्थ अलग-अलग है। विदेही माना निराकारी और अशरीरी माना देह की फीलिंग से परे।

इस तरह बाबा के जो उच्चारे हुए महावाक्य व शब्द हैं, उनके भावार्थ को यथार्थ रीति से यदि समझें तो पुरुषार्थ में हमारी रुचि बनी रहेगी, उमंग बना रहेगा और अनुभूति होने से, उस स्थिति का रसास्वादन होने से हमें प्रसन्नता का अनुभव होगा। हम बाबा के उच्चारे हुए हर महावाक्य का, शब्दों का इस तरह से अनुभव कर अपने आप को भरपूर कर सर्वगुण सम्पन्न बन सकेंगे।

आत्म-अभिमानी स्थिति : आत्म-अभिमानी अवस्था माना स्वयं को आत्मा समझना, आत्मा के गुणों को अनुभव करना, स्वयं को आत्मिक स्वरूप में स्थित करना और अनुभव करना। आत्मा के शुद्ध नशे में स्थित होना, ये है आत्म-अभिमानी स्थिति। जैसे आत्मा सतोगुणी है, सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता। इन सभी गुणों में से एक-एक गुण लेकर उसकी गहराई को रियलाइज़ करना, देखना व समझना, इसी को आत्म-अभिमानी स्थिति कहा जाता है।

देही-अभिमानी स्थिति : देही-अभिमानी स्थिति माना इस शरीर में रहते भी स्वयं को इस शरीर का मालिक समझकर कर्म करना। अर्थात् स्वराज्य अधिकारी स्टेज। कर्म-इंद्रियों पर राज करना। कोई भी कर्मेन्द्रिय आपको वशीभूत नहीं कर सकती, आपको धोखा नहीं दे सकती। देह से सम्बंधित कोई भी प्रभाव आत्मा पर न हो बल्कि आत्मा की शुद्धता व पवित्रता का प्रभाव देह की सर्व कर्मेन्द्रियों पर हो। इसी को देही-अभिमानी स्थिति कहते हैं।

ग्वालियर-म.प्र.। कैबिनेट मंत्री नारायण सिंह कुशवाह को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय पत्रिका व सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आदर्श दीदी। साथ हैं ब्र.कु. प्रहलाद भाई।

वर्धा-महा.। जिला सामान्य अस्पताल में आयोजित नशा मुक्त भारत अभियान के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. सचिन परब, जिला शल्य चिकित्सक डॉ. तडस साहेब, डॉ. सलूजा मैडम, डॉ. सुदर्शन हरणे, डॉ. गोडे तथा स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी।

छतरपुर-म.प्र.। हरिभूमि के संपादक राज पटेरिया एवं दबंग मीडिया के संपादक भूपेंद्र सिंह को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रीना बहन।

पन्ना-म.प्र.। डॉक्टर्स डे के उपलक्ष्य में डॉ. अभिषेक जैन,मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी,सीबीएमओ एवं उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सीता बहन।

02/24-पहेली का उत्तर

अव्यक्त मुरली 30-03-2000

ऊपर से नीचे: 1.मालिक, 2. रथ, 3. अविनाशी, 4. फरिश्ता, 7. कर्ज, 8. भय, 9. विश्व, 10. गोल्ड, 11. संसार, 12. रक्षाबंधन, 14. सम्मान, 17. लास्ट, 20. पूजा।

बायें से दायें :1. मास्टर, 3. अनादि, 4. फल, 5. कर्म, 6. नाटक, 9. विजय, 11. संस्कार, 13. मोल्ड, 14. समय, 15. नर, 16. मम्मा, 18. वध, 19. लास्ट, 20. पूज्य, 21. सजा।

तलेन-म.प्र.। गीता प्रवचन माला कार्यक्रम के तहत कलश यात्रा के माध्यम से सभी को गीता का भगवान परमपिता शिव हैं यह संदेश दिया गया। इसका शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया जिसमें थाना प्रभारी रामवीर सिंह परिहार, नायब तहसीलदार प्रयांक श्रीवास्तव, नगर अध्यक्ष नारायण सिंह यादव, राजगढ़ जिले की प्रभारी ब्र.कु. मधु दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. वैशाली बहन, ब्र.कु. तेजस्वी बहन एवं गायत्री परिवार के सदस्य शामिल रहे।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-03 (2024 -25)

1		2	■	3		4		■	■
	■	5			■		■	■	6
	■		■		■	■	7		
■	■		■	■	8	■		■	
■	9	■	■	■	10			■	■
11				■		■		■	12
	■	■	■	■	■	13	■	14	
15		16		■	■		■	■	
	■		■	17	18		■	19	
■	20			■		■	21		■

ऊपर से नीचे

1. अचानक के पेपर में यह ..... का अभ्यास बहुत आवश्यक है, शरीर से न्यारा (3)
2. ..... भोजन खाने से नींद, आलस्य, मानसिक बोझ, मनोविकार तथा अपराधिक प्रवृत्तियां बढ़ती हैं। (4)
3. अभी तो ..... सो मालिक हो। बालक मास्टर है। बच्चे को सदा कहा जाता है मास्टर। (3)
4. बापदादा पूछते हैं कि हे ..... के बच्चे मास्टर ..... कब अपने मास्टर ..... पन का पार्ट तीव्रगति से विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेंगे? (2)
6. अभी आप सबकी ..... ऐसी हो जो आपकी ..... से बाप और दादा का चित्र देखने में आये। (3)
7. ..... पेपर अचानक होना है, डेट फिक्स नहीं होनी है। (4)
8. रूई, सूत (3)
9. प्राणी, देहधारी, प्राणधारी (2)
10. अपने लिए सोचते हो-यह तो होता ही है, इतना तो होगा ही और दूसरों के लिए सोचते हो यह क्यों किया, क्या किया। इन सब बातों को पेपर समझकर ..... होने का लक्ष्य रख करके ..... करो। ..... होना है, ... करना है और बाप के ..... रहना है तो फुल ..... हो जायेंगे। (2)
11. आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट, ... , स्वीटेस्ट बच्चों को देख रहे हैं। (4)
12. मदद करना, सहायता करना, सहकार्य (4)
13. ..... पर तिलक लगाते हैं। (3)
16. बापदादा फिर भी ..... दिल है, तो बापदादा डेट बताते हैं अटेन्शन से सुनना। (3)
18. अभी देखो ..... को, क्योंकि ..... है मुख्य मंत्री। तो राजा अपने ..... मंत्री को सेकण्ड में आर्डर कर अशरीर, विदेही स्थिति में स्थित कर सकते हो। (2)
19. विलाप करना, शोक करना, दुःखी होना। (2)

बायें से दायें

1. स्वयं भाग्य ..... द्वारा आप भाग्यवान आत्माओं का दिव्य ब्राह्मण जन्म हुआ हैं। (3)
3. ..... बच्चों को देख कर खुश होते हैं। (4)
4. पिता के पिता को ..... कहा जाता है। (2)
5. आप सबको भविष्य में ..... दिल्ली में बनाना है या आसपास बनाना है। (3)
7. बापदादा के पास हर एक बच्चे के दृढ़ संकल्पों की ..... है। (3)
10. परमात्मा आकर पतित दुनिया को ..... बनाते हैं। (3)
11. सदा ..... और लक्की आत्माओं को बापदादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के अनुभवी आत्माओं को यादप्यार और नमस्ते। (4)
14. रास्ता, मार्ग, पथ (2)
15. हर परिस्थिति में हमें अपनी ..... अवस्था बनानी हैं। (4)
16. शहद, मधु (2)
17. मुहावरा - ..... का हक़ अदा करना। (3)
19. मरीज़, रोगग्रस्त, बीमार (2)
20. ..... की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पड़ेता रहेगा, ... पर ठीक हो जायेंगे। जो ..... का आधार लेता है, ... ठीक कर देगा, या ..... पर ठीक हो जायेगा... उनका टीचर कौन? ..... या स्वयं परम आत्मा? (3)
21. कमजोर को शुभ भावना का बल ....., कमजोरी नहीं देखना। (2)

साधना कैसे हो...!

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

एक सच्ची घटना से शुरू करते हैं इस बात को कि अभी-अभी किसी से बात हो रही थी। तो उन्होंने एक बात सुनाई कि वो दस से पंद्रह दिन के लिए किसी स्थान पर गये थे और वहाँ पर कम्पलीट, सम्पूर्ण मौन में रहना होता है। कोई भी बातचीत नहीं। आपका मोबाइल फोन, आपका लैपटॉप आपका सबकुछ ले लिया जाता है। और आपको बिल्कुल अपने आपसे जोड़ने की कोशिश की जाती है। ऐसा उन्होंने बताया। कहते हैं कि तीन से चार दिन तक हमारे अन्दर कोई भाव ही नहीं जगा। परेशानी बढ़ती चली गई। लेकिन कुछ दिन बाद जब थोड़ा मन, क्योंकि जब कुछ भी ऐसा करने को नहीं था तो धीरे-धीरे मेरा मन लगना शुरू हुआ इन सब बातों में। और जब उस अवस्था तक आये तो देखा साक्षी होकर कि मैं और आप, या इस दुनिया में कोई भी साधना क्यों नहीं कर पा रहा। तो इस बात की थोड़ा डिटेल समझने की कोशिश करते हैं।

आत्मा को कहा जाता है सत्-चित्त-आनंद स्वरूप। शब्द को पकड़ना है हमें। सत्-चित्त-आनंद स्वरूप अगर मेरा स्वरूप है, अगर चित्त हमारा सत्य है तो आनंदित है। अगर मेरा चित्त पूरी तरह से सत्य नहीं है तो आनंद की अनुभूति हो नहीं सकती। अब इसके लिए कोई जंगल या कोई ऐसा स्थान जहाँ प्राकृतिक वातावरण हो, शांति हो, वहाँ हम चले भी जायें लेकिन अगर हम सत्य नहीं हैं तो आनंदित हो नहीं सकते।

सत्य का अर्थ सीधा समझते हैं कि अगर मेरे अन्दर एक प्रतिशत भी थोड़ा-सा नाम मात्र भी किसी के प्रति कोई भाव है नकारात्मक, या हम दिन में एक भी झूठ बोलते हैं या थोड़ी बहुत बातों में हमारी जो स्थिति है उस स्थिति के आधार से किसी से बात नहीं करते हैं बल्कि बनावटी तरीके से मिलते हैं, जुलते हैं, बात करते हैं तो ये सारी चीज़ें हमारे आनंद को लेकर चली जाती है। इसीलिए कहा जाता है कि कोई इंटेंशली ये काम नहीं करता होता तो आज वो हर पल ऋषि का जीवन जी रहा होता। तो ऋषि का जीवन यही है कि नाम मात्र भी कोई भी देश, राज्य, भाषा, भेद या

> **आनंद की अवस्था का एकमात्र आधार है, वो है अपने सत्य स्वरूप के साथ जीना। चाहे वो मन्सा हो, वाचा हो, कर्मणा हो।**

कोई भी ऐसी भावना, दुर्भावना जो हमारे अन्दर है- ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, अगर ये नाम मात्र भी हैं तो जीवन भर हम कभी आनंदित नहीं रह सकते। क्योंकि कहा जाता है कि मैकेनिकली या जो हमारे अन्दर बुद्धि में बहुत सारी बातें फीड हैं उसको हम एक्यूरेट सुना भी देते हैं। सुना क्यों देते हैं, क्योंकि गाड़ी आपने सीखा, कोई ड्राइवर ले लो। भले वो ड्राइव अच्छा करता है लेकिन कोई ज़रूरी नहीं कि वो स्पीकर भी अच्छा हो। कि मैं बहुत अच्छा बोल भी लेता हूँ। लेकिन ड्राइविंग फोर्स नैचुरल उसने सीखते-सीखते उसको डेवलप कर लिया।

ऐसे ही कोई बहुत अच्छा सबकुछ कर रहा है तो कोई ज़रूरी नहीं है कि उसके अन्दर उस बात की गुह्यता भी है, सच्चाई भी है। अगर ऐसा होता तो व्यक्ति कभी भी इस बात को लेकर परेशान नहीं होता कि मैंने बोला तो इतना कुछ, सोचा भी इतना कुछ लेकिन मेरे अन्दर खुशी और शांति बढ़ क्यों नहीं रही है!

तो न बढ़ने का एकमात्र कारण है जो एक्यूरेसी होती है, एक्यूरेसी का अर्थ यहाँ यही है कि जो आत्मा का मूल स्वभाव है, गुण है वो है सत्यता। अब चित्त की सत्यता जितनी कम उतना हम सबके आनंद में कमी है। तो साधना कैसे होगी? एक छोटा-सा झूठ बोल के हम ज़रा योग लगा कर दिखायें। परमात्मा से जुड़ के दिखायें। एक छोटा-सा जो मैं नहीं करता हूँ वो कर रहा हूँ और बताऊं कि मैं सबकुछ कर रहा हूँ। तो आनंद कहाँ चला जा रहा है मेरा!

इसलिए आनंद की अवस्था का एकमात्र आधार है, वो है अपने सत्य स्वरूप के साथ जीना। चाहे वो मन्सा हो, वाचा हो, कर्मणा हो। और इसपर रोज़ परमात्मा हमको सब सिखाते हैं कि आनंद कहाँ चला गया, आनंद चला गया हम सबके ऑरिज़नल न होने की वजह से। मूल स्वभाव में न आने की वजह से। चारों तरफ के वातावरण में बह जाने की वजह से। तो ये सारी चीज़ें जब हमारे जीवन से चली जाती हैं ना तभी हमारा आनंद भी चला जाता है। अगर साधना को सही करना है, परमात्मा से सही रूप से प्राप्ति करनी है। तो सर्व प्रथम, सबसे पहले अपने सत्य स्वरूप माना एक प्रतिशत भी, ज़ीरो प्रतिशत भी किसी के लिए भी गलत भावना न हो। न खुद के लिए, न औरों के लिए। तब देखो आपकी साधना नैचुरल और न्यूट्रल होगी। और परमात्मा निरंतर आपको याद आते रहेंगे।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं धर्मेन्द्र शर्मा, रोहतक से हूँ। परमात्मा सर्वव्यापी हैं ये हम मानते आये हैं लेकिन ब्रह्माकुमारियां परमात्मा को सर्वव्यापी नहीं मानती। तो क्या इसको सिद्ध करने के लिए आप कोई ठोस तर्क दे सकते हैं?

उत्तर : इसके बहुत सारे रहस्य हैं। जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है। श्रीकृष्ण के भक्त श्रीकृष्ण को जहाँ-तहाँ देखते हैं। पर प्रैक्टिकल में ये होता नहीं है। राधे के समय पर भी राधा ही राधा। सब जगह राधा ही राधा है। राम के भक्त सब जगह राम ही राम है। लेकिन प्रैक्टिकल में वो मनुष्य में भेदभाव रखते हैं। क्या दूसरे समुदाय से नफरत करने वाले लोग ये अभ्यास करते हैं कि सब कृष्ण ही कृष्ण, कृष्ण सबमें है। नहीं करते। उनसे वो नफरत करते हैं। महत्वपूर्ण बात, शंकराचार्य जी ने अद्वैतवाद की स्थापना की थी। अब से कोई कहता है साढे तेरह सौ, पंद्रह सौ वर्ष पहले इसी अन्तराल में कभी की थी उन्होंने। उसमें ये था कि केवल एक ही है। एक ही ब्रह्म है सर्वत्र। आत्मा जैसी कोई चीज़ ही नहीं है। सबके अन्दर वो ही है। मेरे अन्दर भी, तेरे अन्दर भी, उसके अन्दर भी। कुत्ते में भी, बिल्ली में भी, शेर में भी, गाय में भी वो ही है, आत्मा कुछ नहीं। यहीं से सर्वव्यापकता का सिद्धान्त प्रारम्भ हुआ। रामानुजाचार्य, उसने सिद्धान्त में परिवर्तन कर दिया। फिर माधवाचार्य, वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य उन्होंने इन सिद्धान्तों में परिवर्तन किया। फिर स्वामी दयानंद सरस्वती आये उसने तो बिल्कुल परिवर्तन कर दिया,त्रैतवाद।

आत्मा अलग, परमात्मा अलग, प्रकृति अलग। तीनों बिल्कुल अलग-अलग सत्तायें हैं। अविनाशी हैं। बस सभी जगह से एक ही बात मिस रही कि परमात्मा का धाम कहाँ है। धाम का ज्ञान न होने के कारण सभी ने मान लिया कि वो सर्वत्र है। इस शरीर में आत्मा भी है और परमात्मा भी है। परमात्मा के होने की ज़रूरत क्या है? ये शरीर तो आत्मा से संचालित होता है। वो इसका तर्क दे देते हैं कि परमात्मा सबके कर्म देखता है, उसको फल देता है। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। ये ऑटोमेटिक है। ये हमारे ब्रेन के द्वारा संचालित होता है सबकुछ। अगर हम एक जगह बैठकर सैटेलाइट के माध्यम से सारे संसार को देख सकते हैं तो परमात्मा जो ऑलपॉवरफुल है, निराकार है, जो देह के बंधनों से मुक्त है, जो सृष्टि का बीजरूप है, ऊपर बैठकर वो सबकुछ देख सकता है। तो वास्तव में उसका धाम परमधाम ही है। गीता में भी ये शब्द आया है। और हमारे वेदों में भी ब्रह्मलोक की चर्चा है। लेकिन भगवान को सर्वव्यापी कहने के कारण ब्रह्मलोक उसका धाम है ये बात मिस हो गई। अब भगवान जब इस धरा पर आये तो उन्होंने बल्कि हँसते-हँसते कह दिया तुम मुझे गाली देते आए हो कि मैं सब में हूँ, सुअर में, कुत्ते में, गंदगी में, सबमें फैला हूँ मैं? तुम मुझे गाली देते आते पाप आत्मा बन गए हो। मेरा धाम तो बहुत पवित्र है। भावना तो शुद्ध थी पर गड़बड़ तो हो गई। जो परम पवित्र है उसका धाम भी तो परम पवित्र ही होना चाहिए। यहाँ गंदगी में क्यों रहेगा भला! स्वयं भगवान के महावाक्य सुना रहा हूँ- 'मैं अगर हर जगह होता तो तुम्हारा ये बुरा हाल क्यों होता।' मेरे होते तुम दुःखी हो जाते तो मेरा महत्व क्या रहा! मैं शांति का सागर और तुम अशांति में जीवन व्यतीत करते तो मेरा महत्व क्या हुआ! तो उसने स्वयं आकर बताया मैं सब जगह नहीं हूँ, मैं ज्योति स्वरूप हूँ। मेरा धाम भी परमधाम है, वहीं से मैं आता हूँ। अब इस तर्क को लीजिए, हमारे हिन्दु धर्म में सभी जगह सब लोग इसको मानते हैं कि जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है तब-तब भगवान इस धरा पर अवतरित होते हैं। तो कहाँ से? छोटी-सी बात, उतरना यहीं है तो अवतरण शब्द ही गलत हो गया। कोई कहते है यहीं है प्रगट हो गये। जैसे नर्सिंग रूप में प्रगट हो गये। उसको प्रगट होना कहा जायेगा, अवतरित होना नहीं। अवतरित होना माना वो कहीं से नीचे उतरते हैं। तो उनका धाम है। संसार में हर व्यक्ति, हर धर्म के व्यक्ति को हमने देखा खुदा कहेंगे ऊपर को, अंगुली ऊपर करेंगे, आम भाषा में ऊपर वाला जाने सब। तो ये ऊपर वाला कौन है, वो कहाँ है? हमारी नैचुरल जो फीलिंग्स हैं वो भी ऊपर को जाती हैं कि हे प्रभु! जाने या न जाने उसको और वो कहीं ऊपर है ये फीलिंग अवश्य है। इसीलिए सत्य तो यही है सभी शरीरों में निवास है आत्माओं का। परम आत्मा अलग चीज़ है। जो ब्रह्म लोक में निवास करते हैं सबसे ऊपर। और वहीं से हम सब इस धरा पर आये हैं। और वहीं से वो भी अवतरित होते हैं।

प्रश्न : मैं अंशु जैन, दिल्ली से हूँ। पिछले तीन वर्षों से ईश्वरीय विश्व विद्यालय से मैं जुड़ी हुई हूँ। लेकिन ये जो पुराने संस्कार हैं ये परिवर्तित नहीं हो रहे हैं। संस्कारों का परिवर्तन सहज कैसे हो और यदि हमारे नज़दीकी व्यक्ति भी बुरे संस्कारों से, आदतों से ग्रस्त हों तो क्या हम उसे भी परिवर्तित कर सकते हैं?

उत्तर : हम एक चीज़ पर विचार करेंगे। यदि संस्कार अच्छे से बुरे हो गये हैं तो बुरे से अच्छे भी हो सकते हैं। कुछ ऐसे लोग हैं जो अपने क्रोध के संस्कार को जीत चुके हैं, वो सॉफ्ट हो गये हैं, नम्र हो गये हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने ज़िद्द करने के संस्कार को तिलांजलि दे दी और वो बहुत ही सॉफ्ट होकर मिलनसार हो गये। तो संस्कार तो बदलते हैं। अब इसके लिए है कुछ साधना। अपने मूल संस्कारों को याद करें जब हम आत्मा परमधाम में थे तब हमारे संस्कार कितने डिवाइन, कितने प्युअर थे। उसको अपने सामने लाया करें। जब हम देवता थे तो हमारे संस्कार कितने सुन्दर थे। देवत्व से भरपूर थे हम, सम्पूर्ण पावन थे हम, कितने सुखदाई थे। कितने निर्मल थे, कितने नम्र थे। वो स्वरूप को सामने लाया करें। इन दो स्वरूपों को सामने लाने से हमारे मूल संस्कार इमर्ज होने लगेंगे। और ये जो अब के संस्कार हैं वो बदलने लगेंगे।

अपने संस्कार बदलने के लिए भी इन सबके साथ आपको चाहिए जो एक संस्कार आपको बदलना है, जो आपको कष्ट दे रहा है। ये बहुत अच्छी बात है कि आपको अपने गलत संस्कार का ज्ञान है। क्योंकि संसार में बहुत लोग ऐसे हैं जिन्हें अपने संस्कारों का पता नहीं। वो अपने को राइट समझ रहे हैं। लेकिन जो लोग अपने बुरे संस्कारों को पहचान गये। लक्ष्य बना लिया कि मुझे इन्हें चेंज करना है तो उनको एक शक्ति तो पहले ही आ जाती है। उन्हें उस संस्कार को ख्याल में रखते हुए रोज़ एक घंटा मेडिटेशन करना होगा तीन मास। और लक्ष्य बना लेना होगा कि इस संस्कार को मुझे बदल लेना है। तो योग की शक्ति से, और दो चीज़ जो मैंने पहले कही अपने अनादि और आदि संस्कारों की स्मृति से संस्कार तेजी से बदल जायेंगे। और रही बात दूसरों के संस्कार बदलने की उसमें हमें बहुत अच्छी सब्कॉन्शियस माइंड की विधि जो बताते आए हैं कि सवेरे पाँच बजे जब वो व्यक्ति सोया हो। उसे पाँच-दस मिनट गुड वायब्रेशन देंगे। और फिर उसे आत्मा देखकर बात करेंगे, यू आर अ गुड सॉल। तुम तो देवता थे। ये संस्कार तुम्हारा नहीं है। ये तो पराया है, तुमने इसको एडॉप्ट कर लिया है। तुम इसे छोड़ दो। उन्हें प्रेरित करेंगे कि तुम्हें अब मनुष्य से देवता बनना है। बहुत अच्छा मनुष्य बनना है। सबको सुख देना है। रोज़ सेम टाइम अगर इस तरह के वायब्रेशन उस व्यक्ति को देंगे लेकिन साथ रोज़ आधा घंटा योग का दान भी उनको करना पड़ेगा तो उसमें कोई संदेह नहीं कि दूसरों के संस्कार भी बदल जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

बापदादा को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

समारोह में दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी व संस्थान के अन्य वरिष्ठ भाई-बहनों के साथ केक काटते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

संत सम्मेलन के दौरान संत-महात्माओं व दादियों के साथ ब्र.कु. निर्वैर भाई।

संस्थान के सेक्रेट्री जनरल...

-पेज 1 का शेष

ब्रह्मा बाबा के साथ ब्र.कु. निर्वैर भाई।

ब्रह्मा बाबा से टोली लेते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

ब्रह्मा बाबा के मुम्बई आगमन पर मातेश्वरी जगदम्बा(मम्मा) के साथ ब्र.कु. निर्वैर भाई व अन्य।

ब्रह्मा बाबा के साथ ग्रुप में ब्र.कु. निर्वैर भाई तथा अन्य साथी भाई।

पुस्तकें पढ़नी शुरु की। विवेकानंद की किताबों के अनुसार आप मेडिटेशन की प्रैक्टिस भी करते थे।

ज़हन में मानव सेवा का भाव रहा

एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल मुकेरियां में मैट्रिक करने के पश्चात् आपने डीएवी कॉलेज होशियारपुर से उच्च शिक्षा प्रारंभ की। लेकिन आपका मन तो सेना में जाकर देश की सेवा करने का था। आपका ये सपना पूरा हुआ 20 सितम्बर 1954 को। जब आपने भारतीय नौसेना जॉइन की। वहां दिसम्बर 1958 तक इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में ट्रेनिंग पूरी करने के पश्चात् आपने युद्धपोत आईएनएस राजपूत में बड़ी लगन के साथ अपना कार्य प्रारंभ किया। 1961 में आपने गोवा को पुर्तगालियों से मुक्त कराने के लिए ऑपरेशन विजय में भी हिस्सा लिया।

मेडिटेशन की इच्छा ने कराया परमात्मा का सत्य परिचय

उसी दौरान मुम्बई में सन् 1959 के आरंभ में मेडिटेशन सीखने की इच्छा से आपने एक दोस्त के साथ ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कोलाबा सेवाकेंद्र पर जाना शुरु किया। वहां पर आप आध्यात्मिक ज्ञान से परिचित हुए और अनेकों रूहानी अनुभवों से आपको निश्चय हो गया कि स्वयं निराकार परमात्मा शिव ब्रह्मा बाबा को माध्यम बनाकर सत्य ज्ञान दे रहे हैं। जो चीज़ आप बचपन से ढूंढ रहे थे, वो वास्तविक आध्यात्मिक ज्ञान आपको वहां प्राप्त हुआ।

मिला बाबा का पत्र

जल्द ही आपका माउण्ट आबू में ब्रह्मा बाबा के साथ पत्र-व्यवहार शुरु हो गया। तब बाबा ने आपके पहले पत्र का जवाब कुछ यूं दिया था...

"नूरे रतन निर्वैर शेर प्रति याद प्यार। पत्र बच्चे का पाया, हर्ष आया। अब जब बेहद के बाप को पहचाना है, तो उनसे सौ प्रतिशत पवित्रता, सुख और शांति सम्पन्न ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करना है 21 जन्म के लिए। एक दिन बाप और बच्चे अवश्य सम्मुख मिलेंगे। और याद प्यार अपने दोस्तों को देना।"

प्रथम मुलाकात जीवन को बदलने वाली

छः मास पत्र-व्यवहार के बाद ही 13 जुलाई 1959 के दिन ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिव परमात्मा से सम्मुख मिलन मनाने के लिए आपका माउण्ट आबू आना हुआ। आपकी बाबा से प्रथम मुलाकात जीवन को पलटाने वाली थी। उस वक्त दृष्टि लेते हुए बाबा के मस्तिष्क से शिव परमात्मा के ज्योति स्वरूप को आपने स्पष्ट देखा और आपको बेहद अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति हुई। उसी समय आपने दिल ही दिल में बाबा से कहा कि आज से ये मेरा जीवन पूरी तरह आपकी सेवा के लिए रहेगा।

आध्यात्मिक सेवा करने की ब्रह्मा बाबा से मिली ट्रेनिंग

अक्टूबर 1959 से मार्च 1960 तक आपको ब्रह्मा बाबा से मुम्बई प्रवास के दौरान आध्यात्मिक सेवा करने की ट्रेनिंग मिली। बाबा के आदेश पर उसी वर्ष शिवरात्रि के मौके पर आपने सोमनाथ मंदिर में जाकर देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी मुलाकात की तथा बाबा द्वारा दी गई सच्ची गीता की पुस्तक और प्रसाद उन्हें भेंट की। साथ ही वहां आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाकर सभी को ईश्वरीय ज्ञान से परिचित कराया।

1963 में 25 साल की उम्र में आपने इंडियन नेवी के उज्वल करियर का त्याग कर सेवानिवृत्ति ले ली और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ईश्वरीय सेवा के महान कार्य में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

दादी ने मुख्यालय माउण्ट आबू में सेवा की ज़िम्मेवारी दी

जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के कुछ वक्त बाद ही तत्कालीन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने आपको मुख्यालय में ऑफिस को सम्भालने की ज़िम्मेवारी दी। जिस कारण आप 7 मई 1970 को मुम्बई से माउण्ट आबू स्थानांतरित हो गए।

1982 में संयुक्त राष्ट्र संघ में संस्था का किया प्रतिनिधित्व

1982 में आपने संयुक्त राष्ट्र संघ में संस्था का प्रतिनिधित्व किया और यूएनओ के जनरल सेक्रेट्री से भी मुलाकात की और उन्हें संस्था के विश्वव्यापी सेवाओं से अवगत कराया। उस दौरान आपने दो महीने तक उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका और यूरोपीय देशों में हज़ारों लोगों की आध्यात्मिक सेवा की।

माउण्ट आबू में आपके निर्देशन में 1983 से हर साल विश्व शांति सम्मेलन और बाद में विभिन्न वर्गों के महासम्मेलन आयोजित होने लगे। जिनमें देश-विदेश की अनेक प्रमुख नामचीन हस्तियां शामिल होने लगीं।

बढ़ती सेवाओं में आपकी अहम भूमिका रही

जिस रफ्तार से संस्थान के जनकल्याण की सेवाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थीं, वैसे ही मुख्यालय माउण्ट आबू में आने वाले मेहमानों की तादाद भी हर साल बढ़ती जा रही थी। आने वाले मेहमानों को ठहरने का अच्छे से अच्छा प्रबंध देने के लिए नित नये आवासीय परिसर विकसित करने में आपने अहम भूमिका निभाई। माउण्ट आबू में ज्ञान सरोवर और शांतिवन, गुरुग्राम के पास ओम शांति रिट्रीट सेंटर और हैदराबाद में शांति सरोवर जैसे अति सुंदर और विहंग परिसर आपने अपनी देखरेख में बनवाये।

आपके नेतृत्व में स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार

1991 में आप माउण्ट आबू में ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के निर्माण के निमित्त बने। और तब से लेकर आप ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी की ज़िम्मेवारी बखूबी निभा रहे थे। बाद में आपके मार्गदर्शन में ट्रॉमा सेंटर, आई हॉस्पिटल, नर्सिंग कॉलेज इत्यादि भी उसमें शामिल होते गए।

ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई के साथ राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई।

माउण्ट आबू में सम्मेलन के दौरान वरिष्ठ भाजपा नेता लाल कृष्ण आडवाणी से मिलते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

माउण्ट आबू आने पर योग गुरु बाबा रामदेव जी का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

शांतिवन में मकर संक्रांति त्योहार के अवसर पर पतंग उड़ाते हुए ब्र.कु. निर्वैर भाई।

सदा सेवा में कुछ नया करते जाना, यही आपका मंत्र रहा

'जब तक सतयुग की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक आराम नहीं करना है', बाबा के ये महावाक्य सदा आपको उमंग-उत्साह से भरपूर रखते। साइलेंस में रहकर परमात्मा का ध्यान लगाना आपको सर्वोप्रिय था। आपको ईश्वरीय सेवाओं की योजनाएं बनाने का वरदान और महारत प्राप्त थी। सदा सेवा में कुछ नया करते जाना है, यही आपका मंत्र था।

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई जी, रूहानी बगिया के एक ऐसे चेतन फूल थे जिनके दिव्यगुणों की खुशबू से सारा आलम महक जाता। आपका तपस्वी और सेवामयी जीवन, ऊँची सोच रखने और सबको साथ लेकर ईश्वरीय कार्य में अपने गुणों व शक्तियों से सहयोगी बनने की प्रेरणा सदा देता रहेगा।

ऐसे महान तपस्वी राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई जी के अव्यक्तारोहण पर हम उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

राजयोग मेडिटेशन से बढ़ेगी खिलाड़ियों की मानसिक शक्ति

अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती कोच महावीर सिंह फोगाट ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ के स्पोर्ट्स विंग के कार्यों को पिछले कई सालों से जानता हूँ। भारत देश के खिलाड़ियों के प्रति उनकी निःस्वार्थ सेवाओं की मैं सराहना करता हूँ। इस विंग के द्वारा सिखाये गये राजयोग को अगर खिलाड़ी अपने जीवन में अपनाता है तो आने वाले ओलम्पिक खेल में भारत बहुत अच्छा प्रदर्शन कर सकता है।

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में संस्थान के स्पोर्ट्स विंग द्वारा 'खेलों में सफलता के लिए पॉज़िटिव माइंड सेट का विकास' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में खेल जगत से जुड़े हुए प्रतिनिधियों, प्रशिक्षकों एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों ने भाग लिया।

सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका तथा स्पोर्ट्स विंग की वाइस चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. शशि दीदी ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेलों में सफलता प्राप्त करने के लिए शक्तिशाली व सकारात्मक माइंड सेट की ज़रूरत होती है। हमें हर हाल में अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना होता है। राजयोग मेडिटेशन मन की शक्ति को कई गुना बढ़ा देता है और फिर हम बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त करते रहते हैं। स्वर्णिम गुजरात स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर अर्जुन सिंह राणा ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से अनुरोध करते हुए कहा कि आप हमारे साथ एक एमओयू करें और हमारे खिलाड़ियों को मानसिक शक्ति के विकास में प्रशिक्षण दें। उस्मानिया विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट के डीन डॉ. राजेश कुमार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के साथ पिछले 10 वर्षों से हमारे विश्वविद्यालय का संपर्कहै। यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय दुनिया में शांति और सुख की स्थापना के लिए एक अद्भुत कार्य कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय बॉक्सिंग रेफरी ब्रिगेडियर विक्रम सिंह ने कहा कि मेडिटेशन और अच्छी जीवनशैली के आधार पर जीवन में सच्चा सुख, शांति एवं उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है। भारतीय नेवी के अंतर्राष्ट्रीय तैराक विनय सहरान, ब्रह्माकुमारीज़ खेल प्रभाग के नेशनल कोऑर्डिनेटर डॉ. जगबीर, ब्रह्माकुमारीज़ खेल प्रभाग के नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. रोहतास, प्रभाग की गुजरात ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. तारा दीदी, प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. अदिति बहन, प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. नंदिनी बहन आदि ने भी अपने विचार रखे। कॉन्फ्रेन्स के दौरान ब्र.कु. ई.वी. गिरीश, ब्र.कु. ओमकार, ब्र.कु. वासन्ता, ब्र.कु. सारिका आदि वक्ताओं ने खिलाड़ी एवं प्रशिक्षकों का सुचारु रूप से मार्गदर्शन किया।

अपनी एनर्जी को बचाकर हम अपने अंदर के हीरो को जगा सकते हैं : चन्द्रिका दीदी

पुणे-पिसोली(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ के जगदम्बा भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर में संस्था के युवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'डिस्कवर द हीरो विदिन' विषयक युवा सम्मेलन में प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी ने कहा कि मनुष्य जीवन में सबसे मूल्यवान है - समय। लेकिन आज समय की कदर खासकर युवाओं में नहीं रही है, इसलिए वे अपने उद्देश्य से भटक रहे हैं। उन्होंने कहा कि कम्पैरिज़न और कॉन्ट्रास्ट में अपनी एनर्जी जो व्यर्थ जाती है, उसे बचाना है, तब हम अपने अंदर के हीरो को जगा सकते हैं। परिवर्तन सामाजिक संस्था के संस्थापक गुलाबराव पाटिल ने कहा कि सकारात्मक ऊर्जा मिलने के स्थान दुनिया में बहुत कम हैं और उनमें से एक स्थान है ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सेवाकेंद्र। इन सेवाकेंद्रों द्वारा सिखाये जाने वाला ज्ञान जीवन में सकारात्मकता को लाता है।
पुणे शहर युवक व क्रीडा सेल कांग्रेस के अध्यक्ष आशुतोष शिंदे ने कहा कि मेडिटेशन करने से हमारे अंदर का पोटेंशियल समझ आता है, और यह भाव उत्पन्न होता है कि हम सब यूनीक हैं। लव, केयर एंड शेयर

• युवा प्रभाग द्वारा 'डिस्कवर द हीरो विदिन' युवा सम्मेलन का सफल आयोजन

थिंकरबेल लैब के ब्रांड एम्बेसडर 11 वर्षीय वंडर बॉय प्रथमेश सिन्हा ने कहा कि हर समस्या का सामना करने की ताकत आध्यात्मिकता में है। आज-कल युवाओं में एक ट्रेंड है - 'मोर पावर टू यू'। यह पावर तब आएगी जब आप आध्यात्मिकता से जुड़ेंगे। उन्होंने सभी को राजयोग मेडिटेशन सीखने के लिए प्रेरित किया।

संस्था के संस्थापक पीयूष शाह ने कहा कि भारत को विश्वगुरु बनाना हर एक युवा का लक्ष्य होना चाहिए, जिसमें आध्यात्मिकता अहम भूमिका निभा सकती है। जगदम्बा भवन की सह संचालिका ब्र.कु. शीतल बहन ने कहा कि युवाओं में एनर्जी है लेकिन उस एनर्जी को सही दिशा नहीं मिल पा रही है। संस्था का युवा प्रभाग पिछले 4 दशकों से देश के हर कोने में युवाओं की इस आंतरिक शक्ति को जगाने का कार्य कर रहा है और इसमें राजयोग ध्यान अहम भूमिका निभा रहा है। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. भाग्यश्री बहन ने किया। विक्रांत सिंह,अध्यक्ष, इन्कलाब ज़िंदाबाद,स्वच्छ पुणे, जीवन पाटिल,युवा परिषद् कमेटी सदस्य, स्वरूप खाडके, अनिकेत ढोके,ग्रुप लीडर वीआईआईटी कॉलेज, एनएसएस यूनिट, सुधीर धावड़े, वसंत भुगड़े,अध्यक्ष,जीएसपीएम, धनंजन बेनकर,शहराध्यक्ष,आम आदमी पार्टी व अन्य गणमान्य लोगों सहित लगभग 200 युवाओं ने इस सम्मेलन में हिस्सा लेते हुए अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का शुभ संकल्प किया। कार्यक्रम के दौरान युवाओं के लिए आयोजित पैनल डिस्कशन में ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, जगदम्बा भवन की संचालिका ब्र.कु. सुनंदा दीदी, चार्टर्ड अकाउंटेंट ब्र.कु. प्रफुल्ल भाई, रेडियो जैकी आर्टिस्ट ब्र.कु. रुचा बहन, चार्टर्ड अकाउंटेंट ब्र.कु. तरुण भाई आदि शामिल रहे।

जब तक गांव के लोग आदर्श नहीं होंगे तब तक गांव आदर्श नहीं बनेगा

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा राजऋषि गोकुल ग्राम प्रकल्प के अंतर्गत ट्रेनर्स ट्रेनिंग

नागपुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजऋषि गोकुल ग्राम प्रकल्प के अंतर्गत 'भारत को विश्व गुरु का स्थान पुनः प्रदान करने में भारतीय कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का विशेष योगदान' विषय पर संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा विश्व शांति सरोवर ट्रेनिंग सेंटर में दो दिवसीय ट्रेनर्स टेनिंग का आयोजन किया गया।
कार्यक्रम में राजस्थान के जाहोता गांव के सरपंच शाम प्रताप राठौड ने कहा कि जब तक गांव का विकास नहीं होगा तब तक हमारा देश आगे नहीं बढ़ेगा। जब तक गांव के लोग आदर्श नहीं होंगे तब तक गांव आदर्श नहीं बनेगा।
डिप्टी कमिश्नर डेवलपमेंट कमलकिशोर फुटाणे ने गांव के भौतिक और आर्थिक विकास के साथ सामाजिक और मानसिक विकास की ज़रूरत पर ज़ोर

दिया। रविन्द्र मनोहर,डिस्ट्रिक्ट सुपरिटेन्डेन्ट, एग्रीकल्चर ऑफीसर ने कहा कि जहां सर्व गुणों से सजे हुए मनुष्य रहते हैं उसको ही गोकुल गांव कहते हैं। डॉ. ए.एस. राजपूत,रिजनल डायरेक्टर,रिजनल सेंटर ऑफ ऑर्गेनिक एंड नैचुरल फार्मिंग,नागपुर ने कहा कि हम लोगों को आँखें तो दे सकते हैं लेकिन विज़न नहीं दे सकते। विज़न लेने के लिए हमें ब्रह्माकुमारीज़ में आना पड़ेगा। ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. सुमंत भाई, माउण्ट आबू ने कहा कि ग्राम विकास की सेवाओं का चार स्तंभ स्वच्छता, साक्षरता, स्वास्थ्य और स्वनिर्भरता है। ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी ने कहा कि इस प्रभाग द्वारा भारत भर में गरीबों, किसानों और ग्रामजनों की सेवा विशेष रूप से हो रही है और आगे भी यह सेवायें बढ़ती रहें, यही आशा रखती हूँ। राजऋषि गोकुल ग्राम परियोजना के समन्वयक ब्र.कु. चन्द्रेश भाई ने कहा कि हमें भारत के लोगों के संस्कारों को परिवर्तन करना है तो हमें अन्न के ऊपर काम करना होगा। कहा जाता है जैसा अन्न वैसा मन। प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शशिकांत भाई ने सभी से आदर्श गांव बनाने के लिये प्रतिज्ञा कराई। कृषि रत्न अवॉर्ड विजेता डॉ. आर. बी. ठाकरे, एडिशनल कमिश्नर इनकमटैक्स ऋषि कुमार बिसेन एवं यौगिक खेती की प्रणेता ब्र.कु. मनीषा बहन,कोल्हापुर ने भी अपने अमूल्य विचार रखे।

आत्म प्रबंधन से ही व्यापार में कुशल प्रबंधन हो सकता है : के.एस. राजू

'व्यापार एवं उद्योग में सफलता के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' राष्ट्रीय सम्मेलन

इंदौर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा ओमशांति भवन ज्ञानशिखर में 'व्यापार एवं उद्योग में सफलता के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में मुम्बई से आये विराज प्रोफाइल प्रा.लि. के अध्यक्ष एवं मैनेजिंग डायरेक्टर नीरज राजा कोचर ने ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आने के बाद उनके जीवन में आए बदलाव को साझा करते हुए कहा कि यहां सिखाये जाने वाले राजयोग से मन सशक्त और सोच सकारात्मक बनती है। और हम स्वयं को सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर अनुभव करते हैं। आपने ब्रह्माकुमारीज़ में समझाये जाने वाले सात्विक अन्न के महत्व के अनुसार स्वयं तथा अपनी कंपनी के कर्मचारियों के विचारों एवं व्यवहार में अच्छा परिवर्तन महसूस किया।

नागार्जुना फर्टिलाइज़र के चेयरमैन एवं संस्थापक के.एस. राजू ने कहा कि व्यापार एवं उद्योग में सफलता के लिए स्वप्रबंधन सीखना ज़रूरी है। स्वप्रबंधन के लिए स्व की यथार्थ पहचान होना ज़रूरी है, कि हम शरीर को चलाने वाली एक ऊर्जा हैं, जिसके होने से शरीर की मशीन चल रही है। अतः आत्म प्रबंधन से व्यापार में कुशल प्रबन्धन हो सकता है। मुंबई से आईं स्व प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. क्रीना दीदी ने कहा कि व्यापार एवं उद्योग में मशीन, सिस्टम, टेक्नोलॉजी, इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ इसे संचालित करने वाले मनुष्यों के आत्मिक विकास का भी ध्यान रखा जाए तो व्यवसाय में सफलता भी होगी और इस कार्य में लगे लोगों में संतुष्टता और उमंग भी बना रहेगा। ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ के बिज़नेस एंड इंडस्ट्री विंग द्वारा स्व विकास के अनेक कार्यक्रमों के साथ-साथ स्वप्रबंधन नेतृत्व विकास का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जिसके माध्यम से व्यवसाय जगत में सफलता मिलती है। एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज़ मध्य प्रदेश के प्रेसिडेंट योगेश मेहता, मोयरा सरिया के वाइस चेयरमैन पवन सिंघानिया, ब्रह्माकुमारीज़ उज्जैन संभाग की संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी तथा एसोसिएशन ऑफ इंडस्ट्रीज़ मध्य प्रदेश, मालवा चेम्बर ऑफ कॉमर्स, यशवंत क्लब, डेली कॉलेज बिज़नेस स्कूल, अहिल्या चेम्बर, पीथमपुर औद्योगिक संगठन, क्लॉथ मार्केट एसोसिएशन, अनाज मंडी एसोसिएशन सहित बड़ी संख्या में अनेक संगठन के अध्यक्ष, सचिव एवं सदस्यगणों ने भाग लिया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Oct, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org